सूत की माला

सन् १९४८ में

लिखित

बच्चन की अन्य प्रकाशित रचनाएँ

१—खादी के फूल
२—मिलन यामिनी
३—हलाहल
४—बंगाल का काल
५—सतरंगिनी
६—आकुल अंतर
७—एकांत संगीत
८—निशानिमंत्रण
९—मधुकलश
१०—मधुशाला
११—मधुबाला
१२—खैयाम की मधुशाला
१३—प्रारंभिक रचनाएँ—पहला भाग } कविताएँ
१४—प्रारंभिक रचनाएँ—दूसरा भाग }
१५—प्रारंभिक रचनाएँ—तीसरा भाग—कहानियाँ
१६—बच्चन के साथ क्षण भर

इनके विषय में विशेष जानकारी के लिए प्रकाशक से बच्चन-रचनावली की विवरण पत्रिका मँगाएँ ।

सूत की माला

बच्चन

सेंट्रल बुक डिपो
इलाहाबाद

प्रकाशक
सेन्ट्रल बुक डिपो
इलाहाबाद

पहला संस्करण—जुलाई, १९४८

मुद्रक
जे० के० शर्मा
इलाहाबाद लॉ जर्नल प्रेस
इलाहाबाद

प्राक्कथन

कविता लिखना मेरे जीवन की एक विवशता है—कहना चाहिए अनेक विवशताओं में से एक है। और अपनी इस विवशता का अनुभव संभवतः कभी मैंने इतनी तीव्रता से नहीं किया जितनी बापू जी के वलिदान पर। बापू की हत्या के लगभग एक सप्ताह बाद मैंने लिखना आरंभ किया और प्रायः सौ दिनों में मैंने २०४ कविताएँ लिखीं। मेरे लिखने की प्रगति भी कभी इससे तेज़ नहीं रही।

इन कविताओं को दो संग्रहों में प्रकाशित करा रहा हूँ। 'खादी के फूल' में श्री सुमित्रानंदन पंत के १५ गीतों के साथ मेरे ९३ गीत श्रद्धांजलि संबंधी और 'सूत की माला' में वलिदान से संबद्ध घटनाओं पर मेरे १११ गीत हैं। लिखते समय इस प्रकार के विभागों का कोई ध्यान नहीं था। और इनमें ऐसी भी रचनाएँ हैं जो दोनों में से किसी के भी अंतर्गत नहीं आतीं; पर उन्हें एक न एक में रक्खा ही गया है। घटनाओं के साथ श्रद्धांजलियाँ जुड़ी हैं और श्रद्धांजलियाँ घटनाओं से बिलकुल अलग नहीं रक्खी जा सकीं। चुनाव करने में काफ़ी दिक़्क़त महसूस हुई। अब भी सोचता हूँ कितने ही गीत एक से दूसरे में अदले-बदले जा सकते हैं। पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित करते समय मैंने गीतों के शीर्षक दे दिए थे। संग्रहों से उन्हें हटा रहा हूँ। शीर्षक देकर मैंने कविताएँ नहीं लिखीं; कविता पढ़कर उसकी कल्पना करना कठिन नहीं है।

अपने पाठकों से मैं कहूँगा कि वे पुस्तकों के नाम-भेद को भूलकर दोनों संग्रहों की मेरी समस्त रचनाओं को बापू के वलिदान के प्रति मेरी प्रतिक्रिया समझें।

सौभाग्य से इन गीतों को लिखते समय पंत जी मेरे साथ ही रहते थे; उनकी निकटता में मेरी रचनाशक्ति को एक कलानुकूल वातावरण मिला। इसके लिए यदि उनपर धन्यवाद लादूँगा तो वे समझेंगे कि मैं उन्हें 'बुली' कर रहा हूँ। प्रेस कापी तैयार करने में श्री सत्येन्द्रपाल शर्मा ने सहायता दी। युनिवर्सिटी के नाते वे मेरे शिष्य हैं और उनसे कभी-कभी कुछ काम ले लेने का मेरा अधिकार है। उनका आभार मानूँगा तो वे समझेंगे कि मैं उन्हें 'बना' रहा हूँ। तथास्तु।

बच्चन

सूत की माला

मने—जैसा कि उचित भी था—बापू जी को
समर्पित करने के लिए बनाई थी। परंतु
किसी अज्ञात, प्रबल अंत:प्रेरणा के
वशीभूत होकर मैं इसे अपने
जमादार

श्री जुमेराती को

समर्पित करता हूँ।

भंगी बस्ती के संत की आत्मा संतुष्ट हो!

सूत की माला

गीतों की प्रथम पंक्ति सूची

प्रथम पंक्ति		पृष्ठ

प्रथम पंक्ति | पृष्ठ

सूत की माला

१

उठ गए आज बापू हमारे,
झुक गया आज झंडा हमारा !

(१)

देश की आन औ' बान वे थे,
देश के एक अरमान वे थे,
देश के फ़ख़् औ' नाज़ वे थे,
देश के एक अभिमान वे थे,

देश की ढाल थे तो वही थ,
देश की खड्ग थे तो वही थे,

देश उनका ऋणी हर तरह था,
देश पर एक एहसान वे थे;

एक वे थे हमारी पताका,
जानता था हमें जग उन्हीं से,
एक हमने उन्हें क्या गँवाया,
खो गया सब हमारा सहारा।

उठ गए आज बापू हमारे,
झुक गया आज झंडा हमारा!

(२)

नाम के आज आज़ाद हम हैं,
देश की एकता खो गई है,
क्या इसी पर ख़ुशी हम मनाएँ,
एक की क़ौम दो हो गई है,

लाखहा खो चुके
लाखहा बन चुके हैं भिखारी,

हर जगह आज हैवान जागा,
आदमीयत कहीं सो गई है,

जोकि बोया ज़हर था घृणा का,
आज चारों तरफ़ फल रहा है,
देश में आँख फेरो कहीं भी,
सामने दर्द-डूबा नज़ारा।

उठ गए आज बापू हमारे,
झुक गया आज झंडा हमारा!

(३)

सन बयालीस के ज़ुल्म की थी
याद ताज़ी दिलों में हमारे,
काल-बंगाल के थे न भूले
हम अभी मर्मभेदी नज़ारे,

क़ैद में मौत बा की व्यथामय,
बोस का लुप्त होना अचानक,

देश ने था सहा दिन हुए दो,
आज दुर्भाग्य ही रूप धारे;

ख़ून पंजाब का बह रहा है,
जान कश्मीर की जा रही है,
हैदराबाद बरबाद होता,
दैव ने क्या बुरे वक़्त मारा।

उठ गए आज बापू हमारे,
झुक गया आज झंडा हमारा!

(४)

रात की कालिमा में भयानी
प्रात का गीत जो गा रहा था,
आँधियों में प्रबल जो अचंचल
एक लौ से चमकता रहा था,

हो सकी ज्योति जिसकी न धीमी,
जब प्रलय के अभय मेघ छाए,

खड्ग-सी बजलियों में खड़ा जो
स्नेह से मुसकराता रहा था,

जो लिए था विभा एक ऐसी,
राह सारे जगत को दिखाती,
विश्व के कौन पापी ग्रहों से
डूबता आज है वह सितारा।

उठ गए आज बापू हमारे,
झुक गया आज झंडा हमारा !

(५)

हो गया अब हिमालय अकेला,
हो गई सुरधुनी अब अकेली,
एक उन्नत भ्रुओं का सहोदर,
एक पावन दृगों की सहेली,

एक ही था हृदय इस धरा पर
थाह जो सिंधु की जानता था,

मौत उसकी अचानक, अकारण
बन गई है समय की पहेली;

आज कैलाश उच्छ्वास भरता,
आज गंगा हुई अश्रुधारा,
आज संताप से स्तब्ध सागर,
आज सदमा-दबा विश्व सारा।

उठ गए आज बापू हमारे,
झुक गया आज झंडा हमारा!

(६)

रोग के, वृद्धता के बहाने,
छीनता गर उन्हें काल हमसे,
जो कि जन्मा, मरेगा किसी दिन--
लोक के इस चिरंतन नियम से,

दिन-घड़ी को बुरी हम बताते,
काल की चाल पर क्रोध करते,

देश के, जाति के, सब जहाँ के
भाग्य को कोसते हम क़सम से;

आज माथे मढ़ें दोष किसके,
आज गुस्सा किसे हम दिखाएँ,
हाथ अपने स्वयं पाँव अपने
आज मारे हुए हम कुल्हाड़ा।

उठ गए आज बापू हमारे,
झुक गया आज झंडा हमारा!

(७)

वार उसने दिया देश पर था
प्राण, मन, देह, धन, धाम, यौवन,
जाति ऊपर उठे, जगमगाए,
एक चिंता उसे थी प्रतिक्षण,

शक्ति कण-कण लगा वह रहा था,
जीर्ण तन की इसी एक धुन में,

त्याग-तप जो बना था मुजस्सिम,
हो गया क्यों किसी को अजीरन;

प्रेम का केतु ले हाथ अपने
सत्य के सेतु पर जा रहा था,
बस इसी हेतु वह बन गया था
ग़ैर-अपनों––सभी का दुलारा।

उठ गए आज बापू हमारे,
झुक गया आज झंडा हमारा!

(८)

थी उसी ने बजा युद्ध भेरी
क़ौम की चेतनाएँ जगाईं,
यह उसी के श्रमों का नतीजा,
दासता से मिली जो रिहाई,

स्थान औ' मान दे मानवोचित
था गिरों को उसी ने उठाया,

कर्म के क्षेत्र में नारियों की
थी उसी ने महत्ता बढ़ाई,

धर्म को प्रेम की आग में रख
एक-राष्ट्रीयता ढालता था,
गोडसे ने उठा हाथ उसपर
हाय, बसता हुआ घर उजाड़ा।

उठ गए आज बापू हमारे,
झुक गया आज झंडा हमारा!

(९)

मौन उनको बनाया गया है,
जीभ इस देश की कट गई है,
आँख उनकी मुँदी, देश की ही
आँख में धूल-सी पट गई है,

वे गिरे हैं नहीं गोलियों से,
गिर पड़ा हिंद ही साथ उनके,

क़ौम की शान-इज़्ज़त पुरानी
आज संसार में घट गई है;

लाश उनकी नहीं आज निकली,
आज मुर्दा हुई जाति सारी,
वे नहीं जल रहे हैं चिता पर
देश के भाग्य पर है अँगारा।

उठ गए आज बापू हमारे,
झुक गया आज झंडा हमारा!

(१०)

देह उनकी सका छू विनाशी,
देह से वे नहीं जी रहे थे,
प्राण तो थे अछेदी-अभेदी
घाव केवल बदन ने सहे थे,

जी रहा आज आदर्श उनका,
जग रहा आज संदेश उनका,

विश्व भर का गरल हाथ में ले
प्रेम की वे सुधा पी रहे थे;

आज मिटकर अजर वे हुए हैं,
आज मरकर अमर वे हुए हैं,
कीर्त्ति पर, नाम पर आज उनके
काल का भी नहीं है इजारा।

उठ गए आज बापू हमारे,
झुक गया आज झंडा हमारा !

२

दु:समाचार यह कौन कहाँ से लाया है,
गांधी जी को गोली से गया उड़ाया है,
यह मनगढ़ंत कल्पना किसी दीवाने की,
जा कहो उसे,
है उचित नहीं
ऐसा मज़ाक़

गांधी का कोई हो सकता है कब दुश्मन
ऐसा, आए उनके शोणित का प्यासा बन,
जो हिम्मत करता यह मज़ाक़ दुहराने की,
उसके मुँह में
भर दो मिट्टी,
दो पीट राख

कहना, उसकी जिह्वा कटकर गिर जाएगी,
यदि वह दुनिया में यह अफ़वाह उड़ाएगी,
जनता इसको सुनकर पागल हो जाएगी
मुमकिन है उसके प्राणों पर बन आएगी,
गांधी की ऐसी
जन-जन में है
बँधी साख ।

३

अनेक बार रेडियो सुना चुका,
रुला, अनेक बार सिर धुना चुका,
परंतु हो नहीं रहा यक़ीन है
कि आज देश
के पिता
नहीं रहे।

वही स्वदेश-नाव-कर्णधार थे,
हितेच्छु हिंद के सभी प्रकार थे,
कहाँ समान अनुभवी प्रवीण है
कि जो अनाथ
बाँह जाति
की गहे।

सदैव उच्च लक्ष्य को लिए चले,
ज़माँ टला, ज़मीं टली, न वे टले,
परंतु आज काल से गए छले,
स्वदेश की
तरी जिधर
बहे, बहे।

४

रेडियो सुनाता है यह कैसा समाचार,
खिंचते जाते मेरे अंतर के तार-तार,
हो गया स्तब्ध है हृदय, सुन्न हो गई देह,
बैठा सुनता हूँ
विनत शीश,
अवनतग्रीव ।

कितने सुख का अनुभव करता यह मन अधीर
यदि कोई कह सकता निशि का तम तोम चीर--
फिर बुझे दीप में जगी ज्वाल, भर गया स्नेह,
हो उठे हमारे
बापू जी
फिर से सजीव ।

किसकी आस्था, किसकी श्रद्धा-निष्ठा बनकर
वे जमे हुए थे तन-मन-जीवन के अंदर
जो उनके उठ जाने से लगता है सत्वर,
हिल गई आज
मानवता की
चिर सुदृढ़ नीव ।

५

राम हरे, हे राम हरे,
राम हरे, हे राम हरे!

कौन, कहाँ से, कैसे झपटा,
इसे पूछना है बेकार—
है कोई गुनिया बापू की पीड़ा का उपचार करे!
राम हरे, हे राम हरे,
राम हरे, हे राम हरे!

तीन जगह से निकल रही है
लाल-लाल लोहू की धार—
है कोई धन्वंतरि बापू की छाती के घाव भरे!
राम हरे, हे राम हरे,
राम हरे, हे राम हरे!

रुकी हृदय की हल्की धड़कन
बापू अब जीवन के पार—
है कोई सिद्धेश्वर उनकी छाती में फिर साँस धरे!
राम हरे, हे राम हरे,
राम हरे, हे राम हरे!

६

उसने ऐसे लोगों को अपने साथ लिया,
उसने ऐसे शस्त्रों को अपने हाथ लिया,
उसने ऐसे बंधन से सबको नाथ लिया,
सब शक्ति विदेशी
शासन की
बेकार गई

वह सवा लाख से लड़ा अकेली हिम्मत पर,
वह लड़ा अहिंसा और सत्य की ताक़त पर;
वह पड़ा एक के हाथों से कैसे गिरकर,
साम्राज्य ब्रिटिश
की सेना जिससे
हार गई

जिसने दैत्यों को सिद्ध किया था, बौने हैं,
जिसने टैंकों को सिद्ध किया, मृग छौने हैं,
जिसने ज़ेपलिन-गोलों को कहा, खिलौने हैं,
पिस्तौल ज़रा सी
उसको कैसे
मार गई!

७

जिसने फ़ौजों से कहा कि हिम्मत हो आओ,
जिसने तोपों से कहा कि ताक़त अज़माओ,
जिसने टैंकों से कहा कि मुझपर से जाओ,
वह तीन टके की
गोली से क्यों
दला गया ?

दुश्मन को बिठला देता था जो साके से,
नर को नाहर कर देता था जो हाँके से,
पिस्तौली गोली के बस तीन धड़ाके से,
उसका सब पौरुष,
सारा बल क्यों
चला गया ?

जो डरा न जेलों के जँगलों से, घेरों से,
जो एक निबल निपटा बलमय बहुतेरों से,
जो भिड़ा ब्रिटिश साम्राज्यवाद के शेरों से,
वह एक नरक के
पुतले से क्यों
छला गया ?

८

जिस महामंत्र के अंदर थी इतनी ताक़त,
वह शेषनाग को भी नतफन कर सकता था,
उसको लघु एक सँपोले ने धरकर कीला !—
बीसवीं सदी
विश्वास तुझे
हो सकता है !

ऐसा जहाज़ जो कोटि-कोटि को शरणागत
कर, तूफ़ानों से क्षुब्ध सिंधु तर सकता था,
उसको तल से उठ एक बबूले ने लीला !—
बीसवीं सदी
विश्वास तुझे
हो सकता है !

जो शृंग शीश से छू सकता था चंद्र-नखत,
कंधों पर अपने अंबर को धर सकता था,
है उसे दबाकर बैठा मिट्टी का टीला !—
बीसवीं सदी
विश्वास तुझे
हो सकता है !

६

राम हरे, हे राम हरे,
राम हरे, हे राम हरे!

किए जायँ पिस्तौली गोली
से उसके सीने पर व्रण--
सदियों की आहत जनता की सेवा जो अविराम करे!
राम हरे, हे राम हरे,
राम हरे, हे राम हरे!

लिए जायँ उसकी छाती से
जीवन-लोहू के तर्पण--
देश जाति पर तन-मन अर्पण अपना जो निष्काम करे!
राम हरे, हे राम हरे,
राम हरे, हे राम हरे!

जाति कृतघ्न तुम्हारा कैसे
आज करे अंतिम वंदन--
ख़ून सने हाथों से कैसे तुमको देश प्रणाम करे!
राम हरे, हे राम हरे,
राम हरे, हे राम हरे!

१०

नत्थू ख़ैरे ने गांधी का कर अंत दिया,
क्या कहा, सिंह को शिशु मेढक ने लील लिया !
धिक्कार काल, भगवान विष्णु के वाहन को
सहसा लपेटने
में समर्थ हो
गया लवा !

पड़ गया सूर्य क्या ठंडा हिम के पाले से,
क्या बैठ गया गिरि मेरु तूल के गाले से !
प्रभु पाहि देश, प्रभु त्राहि जाति, सुर के तन को
अपने मुँह में
लघु नरक कीट ने
लिया दबा !

यह जितना ही मर्मांतक उतना ही सच्चा,
शांतं पापं, जो बिना दाँत का था बच्चा,
करुणा ममता-सी मूर्त्तिमान मा को कच्चा
देखते-देखते
सब दुनिया के
गया चबा !

११

प्रार्थना सभा में एक अजाने का आना,
पल भर में गांधी जी की हत्या कर जाना !
मानवता ने जाना ऐसा आघात नहीं,
यह जल्द समझ में
आनेवाली
बात नहीं ।

क्या बात कभी ऐसी निगली जा सकती है---
सहसा वाणी को अपने पंखों से ढकेल
चोंचों से उनके कोमल अंतर को विदीर्ण
करने में हिचका
तनिक न उनका
राजहंस !

क्या बात कभी यह सच मानी जा सकती है---
सहसा धरती को खूँद खुरों से, दूँक-फूँक,
शिव को कंधे से फेंक सींग से क्षत-विक्षत
करने में
सफलीभूत हुआ
नंदी नृशंस !

कल्पना कभी इसकी भी की जा सकती है---
जो भुजग, शांत, शुभ, पद्मनाभ लक्ष्मीपति की
शैया बनकर था पड़ा हुआ, सहसा उसने
फुफकार मार
अपने स्वामी को
लिया डंस !

१२

कब, कहाँ पाप इतने छल-बल से व्याप्त हुआ,
निर्दयता से करुणा का स्रोत समाप्त हुआ,
किस लोक और किस युग में किसको प्राप्त हुआ,
इतनी भीषण
पशुता, दानवता
का प्रमाण !

मानवता जैसे फाँक रही है राख-धूर,
संस्कृति जैसे कूड़ा-कर्कट का एक घूर,
सभ्यता हो गई है लज्जा से चूर-चूर,
हैं छिन्न-भिन्न
विक्षुब्ध काल,
जीवन, जहान !

भू माँग रही है इस घटना का समाधान,
कण माँग रहा है इस घटना का समाधान,
नभ माँग रहा है इस घटना का समाधान,
क्षण माँग रहे हैं इस घटना का समाधान,
जन माँग रहे हैं इस घटना का समाधान,
मन माँग रहा है इस घटना का समाधान !

१३

सदियाँ भेद एक स्वर कहता--
नैनं छिंदंति शस्त्राणि....

तीन धड़ाके हुए हाय,
बापू हो गए धराशायी,
जीवनदायी के चेहरे के ऊपर छाई मुर्दानी।
सदियाँ भेद एक स्वर कहता--
नैनं छिंदंति शस्त्राणि....

तीन गोलियों ने दुनिया पर
हाय, ग़ज़ब कैसी ढाई,
बापू के जीवन-लोहू से बापू की चादर सानी।
सदियाँ भेद एक स्वर कहता--
नैनं छिंदंति शस्त्राणि....

जिसकी जिह्वा ने धरती पर
धार अमृत की बरसाई,
(इसीलिए वह थी आई)
एक तमंचे की हरकत से मूक हुई उसकी वाणी।
सदियाँ भेद एक स्वर कहता--
नैनं छिंदंति शस्त्राणि....

१४

कितनी तेज़ी से बाज़ लवे पर टूटा,
कितनी जल्दी सौभाग्य देश का फूटा,
था नहीं किसी को ज़र्रा भर अंदेशा
तूफ़ान उठेगा
उस छोटे
कोने से।

'हे राम' महज़ वे होठों से कह पाए,
पीड़ा को अपने दिल में रहे छिपाए,
मुसकाया चेहरे पर का रेशा-रेशा,
ख़ुश हुए मुल्क
के लिए जान
खोने से।

दो बात अगर वे अंत समय कर पाते,
क्या मंत्र क़ौम के कानों में दे जाते;
उनका मरना ही एक बड़ा संदेशा,
सुन ले, भारत,
बच जा ग़ारत
होने से।

१५

बापू जी के जीवन का था हर एक श्वास
अपने प्रभु के पद्-पद्मों का दासानुदास,
आखिरी साँस भी तेरी सेवा में जाती,
हे राम, आज
तू ले उनका
अंतिम प्रणाम।

बापू जी के जीवन का था हर एक काम
भारतमाता के चरणों में सादर प्रणाम,
वे अपने बलि की आज सौंपते हैं थाती,
हे देश, आज
तू ले उनका
अंतिम प्रणाम।

तप महाकठिन बापू की आत्मा ने साधा,
तू ने शरीर, दी कभी नहीं उसको बाधा,
तेरे प्रति वह अपनी कृतज्ञता दिखलाती,
बापू के तन,
तू ले उसका
अंतिम प्रणाम।

१६

बड़भागी वह इस पृथ्वी पर कहलाता है,
जो काम देश के और जाति के आता है,
हाथों में अपने खड्ग लिए मर जाता है,
ले न्यायपक्ष,
वे पाँव हटाए
रण करते।

वह दुनिया में बड़भागी है उससे बढ़कर,
जो अपने आख़ीरी दम तक करता संगर,
करके पूरा कर्त्तव्य ख़ुशी से जाता मर
निज मातृभूमि
का जय से
अभिनंदन करते।

सबसे बढ़कर वह जगती में बड़भागी है,
सबसे बढ़कर वह योद्धा है, वैरागी है,
आसक्ति रहित जिसने निज काया त्यागी है
प्रभु चरणों में
श्रम-तप का फल
अर्पण करते।

१७

सुन, दिगंत से ध्वनि आती है--
न हन्यते हन्यमाने शरीरे....

टुकड़े-टुकड़े, हाय, हो गई
राम नाम की माला,
बापू के कोमल वक्षस्थल पर पिस्तौल चली रे।
सुन, दिगंत से ध्वनि आती है--
न हन्यते हन्यमाने शरीरे....

तीन गोलियों से बापू को
क्षत-विक्षत कर डाला,
भक्तों में छिपकर बैठा था कैसा क्रूर छली रे।
सुन, दिगंत से ध्वनि आती है--
न हन्यते हन्यमाने शरीरे....

जीवन की आभा पर छाया
आज मृत्यु-तम काला,
हार गया उजियाला,
हाय, मानना ही पड़ता है कितना काल बली रे।
सुन, दिगंत से ध्वनि आती है--
न हन्यते हन्यमाने शरीरे....

१८

इस तरह छा गया उस संध्या में सन्नाटा,
जैसे कि महाविषधर ने उसको हो काटा,
पल-पल पर लगा उतरने नभ से अंधकार,
भयप्रद कालिख
में डूब गई
धरती तमाम।

भीतर-भीतर किस ताक़त का विस्तार हुआ,
चुपके-चुपके षड्यंत्र कौन तैयार हुआ,
जिसके हैं बापू जी सबसे पहले शिकार;
जिसकी हो यह
शुरुआत, कहाँ
उसका विराम।

जब गांधी की पावन सत्ता पर उठा हाथ,
तब आज सुरक्षित किसकी छाती, कौन माथ,
कुछ आशंका बिच्छू-सी तन को गई मार,
मुँह से निकला,
नेहरू की रक्षा
करें राम!

१६

बुझ गई ज्योति जो हमको पथ दिखलाती थी,
जो अंधकार से हरदम लड़ती जाती थी,
जो अंत विजय का दृढ़ विश्वास बँधाती थी—
कहते पंडित नेहरू
कंपित-कातर
स्वर से।

जो खड़ी रही साम्राज्यों के सम्मुख डटकर,
जो डिगी न सेनाओं की बाढ़ों में तिल भर,
जो दबी न दल में लाख विरोधों के दुर्धर,
गिर गई एक
पागल उच्छृंखल के
कर से।

तमपूर्ण प्रहर जिससे सदियों के दले गए,
जिस लौ को छलनेवाले ख़ुद ही छले गए,
तूफ़ान बलाएँ जिसकी लेकर चले गए,
वह आज बुझ गई
एक पतिंगे के
पर से!

२०

गांधी बाबा दुहराते थे यह बार-बार,
कोई पाएगा नहीं मुझे तब तलक मार,
जब तक मुझसे प्रभु सेवा लेना चाहेंगे,
जब तक समझेंगे
प्रभु मेरी
आवश्यकता।

वे कहते थे पत्ता भी एक नहीं हिलता
जब तक उसको प्रभु का आदेश नहीं मिलता,
जब तलक नहीं होती है अल्ला की मर्ज़ी,
हट नहीं जगह से
अपनी सकता
है नुक़ता।

लाखों के नहीं करोड़ों के दिल दहल गए,
घर-कुटी कहाँ, हिल ऊँचे-ऊँचे महल गए,
चट्टान हो गई एक सामने से ग़ायब,
भूकंप धरा के अंतराल में मचल गए,
ईश्वर की मंशा
का कुछ पता
नहीं लगता।

२१

रघुपति, राघव, राजा राम,
पतित-पावन सीता-राम !

किन पापों से हमने देखा
गांधी जी का ऐसा अंत,
महाभयंकर इस दुष्कृति का आगे होगा क्या परिणाम !
रघुपति, राघव, राजा राम,
पतित-पावन सीता-राम !

भारतीय संस्कृति ने पूजे
सब दिन अपने साधक-संत,
हाय, हमारे युग ने कैसे धारण कर ली यह गति वाम !
रघुपति, राघव, राजा राम,
पतित-पावन सीता-राम !

क्षुब्ध धरा है, क्षुब्ध गगन है,
क्षुब्ध निशा, विक्षुब्ध दिगंत,
लगा समय को ही विष-दंत,
इस अघटन घटना से सबको खाना, सोना, काम हराम !
रघुपति, राघव, राजा राम,
पतित-पावन सीता-राम !

२२

गुरु, पिता, सखा अब अंतिम निद्रा में सोते,
तुम छिप उनके वस्त्रों में बच्चों-से रोते,
हम देख नहीं सकते तुमको धीरज खोते,
तुम हो किस क़द के
औ' किस पद पर,
होश करो।

तुमको है रोने-धोने का अवकाश नहीं,
ग़म में अपने को खोने का अवकाश नहीं,
दुखिया भारत करता तुमसे कुछ प्रत्याशा,
तुम उसको स्वस्थ
करो, उसका
परिताप हरो।

बापू के शव से जब आँखें हट सकती हैं,
वे एक तुम्हारी मुख-मुद्रा को तकती हैं,
अब तुम्हीं देश की और जाति की हो आशा,
संपूर्ण प्रजा का,
नेहरू, तुम
परितोष करो।

२३

जीवन में जगती को बापू ने हिला दिया,
सदियों के मुर्दों को वर्षों में जिला दिया,
जो हमें दिलाना चाहा था वह दिला दिया,
मरकर भी अपनी
प्रभुता को वे
जना गए।

वे और अगर जीने पाते तो क्या करते,
किन आदर्शों को भारत के आगे धरते,
हम कहाँ पहुँचते पद-चिन्हों को अनुसरते,
कितने ही ऐसे
प्रश्न हृदय में
हैं उनए।

जो काम गए वे छोड़ तुम्हें ही करना है,
जो लगा जाति पर घाव तुम्हें ही भरना है,
कंधों पर अपने तुम्हें देश को धरना है,
गद्दीनशीन
अपना वे तुमको
बना गए।

२४

हो गया चिता में भस्म पिता का चोला,
सीने-सीने के ऊपर आज फफोला,
पर शब्द नहीं इसको बतला सकते हैं,
जो बीत रही है
नेहरू की
छाती पर ।

वह खड़ा हुआ है सब के बीच अकेला,
वह आज हुआ है बिना गुरू का चेला,
ज्वालागिरि पाँवों के नीचे फटते हैं,
सिर के ऊपर
मँडराते बीस
बवंडर ।

आओ, हम सब मिल उसको धीर बँधाएँ,
आओ सब मिल उसको विश्वास दिलाएँ,
अब साथ तुम्हारे होकर हम बढ़ते हैं,
दें हमें चुनौती
आएँ प्रलय
भयंकर ।

२५

रघुपति, राघव, राजा राम,
पतित-पावन सीता-राम !

किसी दलित या दल ने उनके
प्रति क्यों रक्खा ऐसा बैर,
मूल साधना थी बस उनकी मानव की सेवा निष्काम ।
रघुपति, राघव, राजा राम,
पतित-पावन सीता-राम !

हाय, न समझा होगा बापू
ने हत्यारे को भी ग़ैर,
भरा क्षमा से था अंतस्तल, धरा जीभ पर था हरि नाम ।
रघुपति, राघव, राजा राम,
पतित-पावन सीता-राम !

साँसत की सँकरी घड़ियों में
करे ख़ुदा भारत की ख़ैर,
(हरम वही है, जो है दैर)
होकर हमसे जुदा गए हैं बापू जी तो अब सुरधाम ।
रघुपति, राघव, राजा राम,
पतित-पावन सीता-राम !

२६

कैसा सहसा सब ओर अँधेरा छाया,
रवि-शशि को जैसे राहु-केतु ने खाया,
जो ज्वाल दिखाती थी पथ उसके ऊपर
किस जड़-अंधड़ ने
मारीं विष की
फूंकें ।

जिसने बापू से जीवन-आभा छीनी,
की उस नरपशु ने कितनी बात कमीनी,
वह पापी सबसे बड़ा आज है भू पर,
कम, जग जितना भी
उसके ऊपर
थूके ।

लेकिन मशाल है अभी नहीं बुझ पाई,
भारत माता ! क्यों हो इतनी घबराई,
की है उसने केवल कर की बदलाई,
देखो, जलती है
हाथों में
नेहरू के ।

२७

नायक के तन की आभा तो हो गई क्षीण,
मैदान-जंग, पर, हुआ नहीं इतना मलीन,
उनके गुण उनके सामंतों में रहे चमक,
वे देंगे हमको
अभी बहुत दिन
तक प्रकाश।

निज तीक्ष्ण बुद्धि वे राजा जी में गए छोड़,
वल्लभभाई में अपना इच्छाबल कठोर,
है देशरत्न का उनकी कोमलता पर हक़,
दे गए नायडू
को वे अपना
हेम हास।

अपना प्रभाव, अपना चुंबक-सा आकर्षण
कर गए एक ही अधिकारी को वे अर्पण,
जो विश्व देखता था गांधी जी को कल तक,
वह ताक रहा है
नेहरू का रुख़
लिए आस।

२८

पंथ का बतला रहा हर एक पत्थर,
शीश की बतला रही हर एक टक्कर,
कह रहा है माथ का हर एक चक्कर,——
यह नहीं केवल गया है प्राण उनका,
सूर्य डूबा
है अँधेरा
घिर रहा है।

क्रूर हिंसा से अहिंसा का सफ़ाया
क्या यही अब देश का होगा रवैया ?
एक युग तक जो किया था या कराया,
हाय, उसपर
आज पानी
फिर रहा है।

जिस समय से मंच पर आए हुए थे,
ज्योति ऐसी आँख में लाए हुए थे,
नाट्य के हर दृश्य पर छाए हुए थे,
यह नहीं केवल महानिर्वाण उनका,
एक युग पर
आज पर्दा
गिर रहा है।

२६

राम हरे, हे राम हरे,
राम हरे, हे राम हरे !

चला न्याय पर चलनेवाला
लेगा उसकी कौन जगह,
है कोई जो शत्रु-मित्र से समता का बर्ताव करे ?
राम हरे, हे राम हरे,
राम हरे, हे राम हरे !

उठे घृणा के बादल नभ में
गरल बरसता है दुर्वह—
अमृत पुत्र है कोई हर सर पर करतल की छाँव करे ?
राम हरे, हे राम हरे,
राम हरे, हे राम हरे !

निर्बल और सबल दोनों में
डर व्यापक है एक तरह—
है सामर्थ्यवान जो सब पर अभयदान का हाथ धरे ?
राम हरे, हे राम हरे,
राम हरे, हे राम हरे !

३०

छापा पड़ता हर सभा-संघ के दफ़्तर पर,
हो रही तलाशी स्वयंसेवकों के घर-घर,
सब पुलिस सुराग़ लगाने में यह तत्पर है
किसने, कब, कैसे,
कहाँ मदद की
क़ातिल की।

कुछ लिखे-छपे कागद-पत्तर मिल जाएँगे,
साज़िश का, संभव है, कुछ भेद बताएँगे,
पर मूल केंद्र षड्यंत्रों का तो अंतर है,
उसकी तह लेना
बात नहीं कम
मुश्किल की।

यदि घृणा तुम्हारे मन के अंदर बसती है,
यदि धर्म तुम्हारा फ़िरक़ा-पंथ-परस्ती है,
तो तुमसे ख़तरे में भारत की हस्ती है,
लो आज तलाशी
सब अपने-अपने
दिल की।

३१

जब गांधी जी की छाती पर आघात हुआ,
तब चरम बिंदु जुर्मों ने निःसंदेह छुआ,
मुजरिम को बाँधो, उसपर रक्खो नज़र कड़ी,
उत्तरदायित्व
महान तुम्हारे
शानों पर।

कर दिए जिन्होंने अलग युगों से हृदय जुड़े,
जिनके कारण हो गया हिंद टुकड़े-टुकड़े,
जिनके कारण लाखों पर आफ़त टूट पड़ी,
क्यों दृष्टि नहीं
जाती है उन
शैतानों पर।

एक ही हाथ जिससे भारत के टूक-टूक,
एक ही हाथ जिससे भारत के प्राण मूक;
यदि फटी देश की चादर, धरते धोबी को,
पर उसे पकड़ पाने में तो तुम गए चूक,
तुम ज़ोर दिखाते
हो गदहे के
कानों पर।

३२

बिंध गए गोलियों से गांधी जी महाराज,
अपराधी नाथूराम गोडसे प्रकट आज,
इसके पीछे वर्षों, बहुतों का छिपा राज़,
जो छपा पत्र में
वह तो ऊपर का
छिलका ।

बापू को मारा नीति विभाजन-शासन ने,
बापू को मारा 'दो क़ौमों' के क्रंदन ने,
बापू को मारा हिंद भूमि के खंडन ने;
वध में नगण्य
है हाथ मराठे
क़ातिल का ।

जाते न किए यदि अलग हिंदुओमुसल्मान,
जाता न किया यदि टूक-टूक हिंदोस्तान,
जाती न जगाई संप्रदाय की अगर आग,
पड़ती न कभी उसमें आहुति इतनी महान;
नाथू के पीछे
हाथ जिना का,
चर्चिल का ।

३३

हम देश-विभाजन मूल्य चुकाने बैठे हैं,
हम लाखों का वलिदान चढ़ाने बैठे हैं,
था शांति-हेतु हमने बँटवारा मान लिया,
फिर भी बजती
सीमाओं पर
रण की भेरी।

थीं अभी चिताएँ चटक रहीं रावी तट पर,
थे अभी हज़ारों भटक रहे बेघर-बेदर,
अब हमने अपने बापू को क़ुर्बान किया;
भगवान, बता,
क्या आगे है
मर्ज़ी तेरी।

ऋषि-देवों की वाणी होती है मृषा नहीं,
गांधी जी ने थी पहले ही यह बात कही--
हमने होकर गंभीर न उसपर ध्यान दिया--
तब देश बँटेगा,
लाश गिरेगी
जब मेरी।

३४

लोहू से बापू जी के कपड़े हुए न तर,
सन गई ख़ून से भारत माता की चादर,
बापू का घायल तन धरती पर नहीं गिरा,
भारत की छाती
पर सहसा
गिर पड़ी गाज।

तुम भले एक को धर ले जाओ बंदीघर,
तुम भले एक को पकड़ चढ़ा दो सूली पर;
किस मनोवृत्ति से आज देश का देश घिरा ?—
उत्तरदायी
इस महापाप का
सब समाज।

यदि हमें देश पर लगे घाव को भरना है
तो हमको अपना पथ परिवर्तित करना है,
बापू को अब हम ला सकते हैं नहीं फिरा,
लेकिन हम उनकी
रख सकते हैं
आन-लाज।

३५

अवघट घाटों से दुर्भागी किस भाँति कढ़े,
किस भाँति कीच को छोड़ तरंग-तुरंग चढ़े,
किस भाँति समुन्नत, कल कूलों की ओर बढ़े,
खेनेवाले दो तरफ़
एक ही है
किश्ती।

हमने कटवा दी देश-गाय हँसते-हँसते,
इससे ज़्यादा हम और नहीं थे कर सकते,
यदि तुरुक आज भी पाकिस्तानी रुख़ तकते,
संपूर्ण जाति की
निश्चय ख़तरे में
हस्ती।

बँटवारे पर भी अगर हिंदुओमुसलमान,
मिल जायँ, व्यर्थ ही नहीं हुआ लोहूलुहान,
व्यर्थ ही नहीं बापू का पावन प्राणदान,
हम समझेंगे
राष्ट्रता मिली हमको
सस्ती।

३६

सीमाओं पर होते हैं दुश्मन के हमले,
घर की हत्या से नहीं सके हैं हम दम ले,
इस संकट में बापू भी हमको छोड़ चले,
लड़खड़ा, देश, मत
इम्तहान की
यही घड़ी।

आफ़त आई है, लेकिन क्यों घबराता है,
केवल घबराने से कोई कुछ पाता है,
हर एक राष्ट्र के जीवन में दिन आता है,
जब की जाती
उसके गुर्दे की
जाँच कड़ी।

जो निकल आग से आता है वह कंचन है,
परखा सोना ही दुनिया का आभूषण है,
तेरे प्रज्वलित भविष्यत का यह लक्षण है—
कर सिद्ध सकेगी
तुझे बड़ा
आपत्ति बड़ी।

३७

यह ठीक कि गाँवों-नगरों का संहार हुआ,
यह ठीक कि लाखों पर अति अत्याचार हुआ,
यह ठीक कि बापू पर गोली का वार हुआ,
लेकिन फिर भी
मत आने दो
मन में पस्ती।

जब कभी ज़माना सोया करवट लेता है,
जग को दहशत के वहशी धक्के देता है,
यह डोल-दहल क्षण-भंगुर है, मत व्यर्थ डरो,
सौ बार उजड़ने
पर भी है
दुनिया बसती।

यह दौर ज़माँ का दुश्मन सदा हमारा था,
लेकिन कब भारत इसके आगे हारा था,
ठंडे दिल से उन कुछ बातों पर ग़ौर करो,
मिट नहीं सकी
जिनके कारण
अपनी हस्ती।

३८

तू सोच ज़रा, तूने यह क्या कर डाला है,
तू उसे खा गया जिसने तुझको पाला है,
ठानी कैसे अंतर में ऐसी हठ तूने,
बापू का बधकर
तू अपना
हत्यारा है।

व्याधे, यदि तेरी हिंसा पर ही थी ममता,
हिंस्रों पर दिखलाता अपने बल की क्षमता,
बापू की कोमलता ने कब पाई समता,
हत उनको तूने
कितना पाप
उभारा है।

अब वर्ण कलंकित हुआ सदा को तेरा है,
अब कुल अभिशापित हुआ सदा को तेरा है,
अब नहीं मिलेगी तुझे प्रतिष्ठा, शठ, तूने
आश्रम के सबसे
पावन मृग को
मारा है।

३९

तू जिस मतलब से हत्या करने था आया,
बतला, निर्दय, क्या तेरा पूरा हो पाया,
परिणाम देख क्या नहीं खुलीं तेरी आँखें,
तू बेमतलब ही
पाप कमाने
आया था।

उनके जीवन की आभा थी जग पर छाई,
पर मौत जिस तरह से बापू जी ने पाई,
उससे वे दुनिया की नज़रों में और उठे,
तू केवल उनकी
कीर्त्ति बढ़ाने
आया था।

हो चुकी विजय थी उनकी अपने दुश्मन पर,
था देश-विदेशों का अभिनंदन छत्र-चँवर,
ले जगह चुके थे वे जन-मन सिंहासन पर,
तू मुकुट शहादत
का पहनाने
आया था।

४०

पूछे जाने पर, 'करके बापू की हत्या
क्या तेरे मन की गति है ?' तूने साफ़ कहा—
'है नहीं मुझे अपनी करनी पर पछतावा !'
भोले, तूने की
अपने मन की
जाँच नहीं ।

शैतान अभी तक तेरे सिर पर बैठा है,
जो तू यों अपनी नादानी पर ऐंठा है,
मोहांध, आज भी समझ, बुझा दी जो तूने
दैवी मशाल
वह थी, सुल्फ़े
की आँच नहीं ।

आ देख, हो गया कैसा जग में अँधियारा,
ले जान आज भी, नहीं अक़्ल का गर मारा,
डाला है तूने जिसे समुंदर की तह में,
वह कोहनूर
हीरा था, कच्चा
काँच नहीं ।

४१

जिस क्रूर नराधम ने बापू की हत्या की,
उसको केवल पागल-दीवाना मत समझो,
वह नहीं अकेला इसका उत्तरदायी है,
है एक प्रेरणा
उसके पीछे
प्रबल - कुटिल ।

वर्ना उस मिट्टी के पुतले में क्या दम था,
जो बापू की आँखों से आँख मिला जाता,
अपने में नाथूराम तमंचे-सा जड़ था,
है किसी शक्ति ने
ऊपर उसे
हुमास दिया ।

जो निर्मल शतदल पर कीचड़ चढ़ बैठा है,
इसमें कुछ उसका दोष नहीं है, स्वार्थ नहीं,
भारत के जीवन के तड़ाग की तह में ही
कोई उधमी
कुंभी-निर्वासित
राक्षस है ।

४२

अपने बल पर वे बने देवता मानव से,
यदि उनको मौत न मिलती नर-पशु-दानव से,
वे अपने आप शहीद नहीं बन सकते थे,
वे उनके दल के
आज अमर
अग्रणी हुए।

हमने बापू को खोया, यह नुक़सान हुआ,
लेकिन हमको उनपर कितना अभिमान हुआ,
हमको बल देनेवाला यह वलिदान हुआ,
निर्धन होकर भी
आज बड़े हम
धनी हुए।

बापू को खो हमने उनकी क़ीमत जानी,
अपनी लघुता, उनकी महानता पहचानी,
मत समझो इसको कोई छोटा काम हुआ,
इस विपता से हम निकलेंगे बनकर ज्ञानी;
हे नाथूराम,
तुम्हारे भी हम
ऋणी हुए।

४३

ऐसी बेख़बरी से कब कोई सोया है ?—
संपत्ति देश की युग-युग से संचित-रक्षित
जब निकल गई ऐसी फिर वापस मिल न सके,
तब पता लगा है
तुमको घर में
चोर घुसा ।

इस लापरवाही की है और मिसाल कहीं ?—
जब देश-भवन का सबसे ऊँचा कंगूरा
लपटों से घिरकर, जलकर, गिरकर क्षार हुआ,
तब ख़बर हुई है
तुमको घर में
आग लगी ।

इस दीर्घसूत्रता का न मिलेगा उदाहरण;
लाखों ने खोई जान, लखोखा बिलट गए,
पर जब बापू की छाती ने लोहू उगला
तब फ़िरक़ेबंदी
के विष को
तुमने समझा ।

४४

गांधी में गांधी से बढ़कर था गांधीपन,

जग उन्हें पूजता था केवल उसके कारण,

हम उसको अब भी ज़िंदा, ताज़ा पाएँगे,

गांधी का चोला

अग्नि-दहे

या नीर-बहे ।

गांधी ने दी हमको गांधीपन की थाती,
जिस हाड़ माँस को समझी क़ातिल ने छाती,
सौ जगह छिदे हम देख नहीं घबराएँगे,
गांधीपन का
लासानी सीना
तना रहे।

रख सकते थे हम उनपर खड्गों का छाता,
गांधीत्व मगर सब तब मिट्टी में मिल जाता,
गांधीपन को हम अक्षत-आभा पाएँगे,
गांधी का तन
लोहू-मिट्टी में
सना रहे।

हम, हाय, बचा पाते बापू को किसी तरह,
इस मोह घड़ी में सोचेंगे सब इसी तरह,
जब जागेगा आदर्श यही हम चाहेंगे—
सौ बार मरें गांधी,
गांधीपन
बना रहे।

४५

उनकी रक्षा होनी थी पहरेदारों से,
जो रहते हरदम लैस छिपे हथियारों से,
यह सब संभव था बापू की चोरी-चोरी,
ऐसा होता तो
आज न भारत
पछताता ।

है ताक़त सबसे बड़ी अहिंसा पृथ्वी पर,
जिसने यह माना-जाना अपने जीवन भर,
यह साबित करता केवल उसकी कमज़ोरी,
फिर किसमें दम था
बापू को यों
भरमाता ।

गांधी ने मरकर गांधीपन को अमर किया,
पहरा यदि उनपर जाता आठों याम दिया,
प्रार्थना सभा में होती यदि नंगाझोरी
तो गांधीपन
गांधी से पहले
मर जाता ।

४६

अब मत सोचो किसने अपनी मति खोई,
किसके हाथों गांधी की काया सोई,
निगलो कटु सत्य कि बापू आज नहीं हैं,
वे गए वहाँ लौटा न जहाँ से कोई;
अब किसी तरह
अपने मन को
समझाओ ।

सब से आगे का नेता स्वर्ग सिधारा,
सब तरफ़ छा गया अँधियारा-अँधियारा,
मिट गया क़ौम का सब से बड़ा सहारा,
बढ़ गया मगर उत्तरदायित्व हमारा;
अब दिल को
पत्थर कर लो,
धीर बँधाओ ।

है गूंज रहा भारत भर में स्वर उनका,
वरदायी कर अब भी भारत पर उनका,
वे निःसहाय क्या हमको छोड़ गए हैं,
उत्तराधिकारी खड़ा जवाहर उनका;
ओ देशवासियो,
मत दहलो,
घबराओ ।

४७

थी उन्होंने कौनसी आशा जगाई,
थी उन्होंने राह क्या ऐसी दिखाई,
थी छिपी जिसमें जगत भर की भलाई,
जो कि उनके निंद्य, बर्बर, क्रूर वध पर
हाथ जैसे
विश्व सारा
मल रहा है।

और हम संसार को मुँह क्या दिखाएँ,
किस तरह अपने गड़े सिर को उठाएँ,
किस तरह इस पाप का मतलब बताएँ,
आज तो
अस्तित्व अपना
खल रहा है।

था हमें कैसा मिला वरदान उनका,
किस तरह हमने किया अपमान उनका,
हाथ अपने कर दिया बलिदान उनका,
क्या करें अब भूल ही अपनी समझकर,
घोर पश्चाताप
से मन
जल रहा है।

४८

वे कौन जाति का तत्त्व दबाए थे तन में,
वे कौन क़ौम का सार छिपाए थे मन में,
उनके जाते ही देश खोखला लगता है,
अब क्यों कोई
दुनिया में उससे
अनुरागे।

वे एक गए, सूना-सूना सब देश हुआ,
वे एक गए, निस्तेज देश निःशेष हुआ,
अब दीप जलाना एक चोचला लगता है,
है अंधकार
ही अंधकार
पीछे - आगे।

भारत के गोशे-गोशे में वे पैठे थे,
हर एक क्षेत्र में अगुआ बनकर बैठे थे,
वे धैर्य बँधानेवाले भी तो एक रहे,
हम, हाय, एक के ऊपर कितना ऐंठे थे,
किससे अब देश
अभागा यह
धीरज माँगे।

४६

अच्छा ही है मौजूद नहीं बा कस्तूरा,
यदि उनको लगता इस दुर्घटना का हूरा,
उनका अभ्यंतर तो होता चूरा-चूरा,
बा औ' बापू
की अरथी चलती
साथ-साथ !

बाबा, मरना है अपने बस की बात नहीं,
यह बज्र-हिया सह लेता क्या आघात नहीं;
उनके होठों से आह आग की उठती ही,
होती आँखों से आँसू की बरसात सही,
पर पोंछ उन्हें
क्या सकते छाछठ
कोटि हाथ ?

उस लुटी हुई को कैसे धीर बँधाते हम,
उस मिटी हुई को क्या कहकर समझाते हम,
अपना मुँह भी कैसे उसको दिखलाते हम ?--
बापू का लोहू देख-देख थर्राते हम,
ईश्वर ही जाने हाल हमारा क्या होता,
देखते अगर
बा का सुहाग
से शून्य माथ ।

५०

कल तक कंधे पर भार लिए थे वे भारी,
थी दूर तुम्हारे माथे से चिंता सारी,
अब होश करो, आई सिर पर ज़िम्मेदारी,
सो गए देश के पिता,
देश के पूत,
जगो ।

यह परमावश्यक है तुम एक रहो सारे,
हिंदू मुस्लिम के, मुस्लिम हिंदू के प्यारे,
जिसमें आपस में क़ायम हों भाईचारे,
सब भेद भूलकर
एक देश के प्रेम
पगो ।

चल दिए पिता, पर छोड़ गए हैं काम बड़ा,
तुम बड़े बाप के बेटे हो, लो नाम बड़ा,
संसार तुम्हारी ओर देखता खड़ा-खड़ा,
पूरा करने में
उसको ही सब लोग
लगो ।

५१

हम उठ न सके उनके ऊँचे आदर्शों तक,
नीचे के नीचे रहे रगड़ कर वर्षों तक,
पर प्रभु अपने नीचों को भी आदरते हैं,
बापू ने निज
हत्यारे को भी
नमन किया ।

वे आज खड़े देवों की दिव्य नसेनी पर
दखते हमें होंगे नयनों में आँसू भर,
पशुता में जकड़े रहने पर भी मानव ने
कितना नक्षत्रों
को छूने का
जतन किया ।

उनकी हत्या से मानवता को पाप लगा,
है नहीं हमें फिर भी देवों का शाप लगा,
उनकी करुणा में आज हमारा भाग जगा,
यदि मैंने समझा ठीक उन्हें, विश्वास मुझे,
बापू ने होगा
पाप हमारा
शमन किया ।

५२

औरंगज़ेब ने जब सूफ़ी साधू सरमद
के शिरच्छेद का हुक्म दिया, उनके आगे
जल्लाद चमकता, नग्न खड्ग ले खड़ा हुआ,
बाहें पसार
तन-मन विभोर
वे यों बोले–

'जल्लाद-खड्ग तुम चाहे जिसका वेश धरो,
प्रभु, धोखा खानेवाली हैं कब सरमद की
आँखें, जो निशदिन बाट तुम्हारी तकती थीं—
तन के पर्दे
को फाड़ तेग़ से
वेग मिलो !'

क़ातिल को आगे देख लिए पिस्तौल भरी
बापू ने मन ही मन यह शब्द कहे होंगे,
प्रभु, आज हाथ में धारण कर यह पिचकारी
तुम फाग खेलने आए मुझसे लोहू से,
मारो, मैं हूँ
बलिहार तुम्हारी
इच्छा पर !

५३

जब-जब कुटिल हुई भारत की
भाग्य विधायक रेखा,
हमने ले आशा नयनों में
बापू का रुख़ देखा;
देश जाति की किस विपदा में
काम नहीं वे आए?

आज किसी राक्षस ने हमपर
ऐसी साँगी छोड़ी,
युग-युग के संचित स्वप्नों की
मूर्ति मनोरम तोड़ी;
घायल क़ौम पड़ी थी उसमें
बापू स्वर्ग सिधाए।

वैद्य सुषेना के घर जाकर
कौन उसे ले आए,
शक्ति लगे भारत की औषधि
क्या है, कौन बताए,
वाण-बिंधे हनुमान पड़े हैं
कौन सजीवन लाए?

५४

रघुपति, राघव, राजा राम,
पतित-पावन सीता-राम !

छोड़ नीड़ का तन बापू की
आत्मा ने पर फड़काए,
आओ कर लें कंपित कर से उनको अंतिम बार प्रणाम ।
रघुपति, राघव, राजा राम,
पतित-पावन सीता-राम !

अपराधी की निर्दयता पर
भी तो बापू मुसकाए,
आओ माँग क्षमा लें हम भी उनके पद-पद्मों को थाम ।
रघुपति, राघव, राजा राम,
पतित-पावन सीता-राम !

बापू के प्रिय पद-भजनों को
आओ सब मिलकर गाएँ,
(शाँति और कैसे पाएँ)
उनके शव के पास बैठकर करें रामधुन यह अविराम—
रघुपति, राघव, राजा राम,
पतित-पावन सीता-राम !

५५

यह रात देश की सब रातों से काली,
भू के दीपों से झड़ी हुई उजियाली,
नभ के तारे भी आँख आज मीचे-से,
अवसाद सभी पर
छाया एक
निराला ।

रख दिया गया बापू का शव छज्जे पर,
जिसमें सबको दर्शन हो जाएँ बराबर,
देखते हज़ारों शोक-जड़ित नीचे से,
है पड़ा हुआ-सा
सबके मुँह पर
ताला ।

डूबा है घुप्प अँधेरे में बिरला-घर,
बस एक बल्ब जलता बापू के मुँह पर,
बस एक उन्हीं का चेहरा आज उजाला,
बाक़ी का तो
हो गया सदा को
काला ।

५६

अब भीड़ बना तुम किसे देखने आए हो,
क्या आज नहीं तुम मन ही मन शरमाए हो,
तुमने उसको है मार गिराया धरती पर,
जिसने लाखों में
नवजीवन
संचारा था।

वे कोटि-कोटि मुर्दों में जान रहे भरते,
वे एक अकेले के हाथों से क्या मरते,
इस महाप्राण को महापाप से ही था डर,
हर एक हृदय में
छिपा हुआ
हत्यारा था।

तुम लज्जित होकर अपना शीश झुकाओगे,
मुँह अंधकार में जाकर तुरत छिपाओगे,
यदि ठंडे दिल से बैठ कहीं सोचो पल भर,
इस नरहत्या में
कितना हाथ
तुम्हारा था।

५७

वे भारत की दुर्दशा देखकर रोए,
थे नहीं एक भी रात चैन से सोए,
काटे हमने जो बीज उन्होंने बोए,
वे थकी नींद में;
मत जयकार
मचाओ।

काफ़ी न हुए उनके श्रम-आँसू के कण,
कर गए ख़ून से वे मिट्टी का सिंचन,
नामुमकिन करना उनका समुचित वंदन,
तुम गीत बड़ाई
के कितने ही
गाओ।

वे थे इस भारत के मधुवन के माली,
एहसानमंद थी उनकी डाली-डाली,
उनके आख़िरी सफ़र की बेला आई,
सर्वस्व दान कर जाते हाथों ख़ाली,
कम हैं तुम उनपर
जितने फूल
चढ़ाओ

५८

आओ बापू के अंतिम दर्शन कर जाओ,
चरणों में श्रद्धांजलियाँ अर्पण कर जाओ,
यह रात आख़िरी उनके भौतिक जीवन की,
कल उसे करेंगी
भस्म चिता की
ज्वालाएँ।

डाँडी की यात्रा करनेवाले चरण यही,
नोआखाली के संतप्तों की शरण यही,
छू इनको ही छिति मुक्त हुई चंपारन की,
इनकी चापों ने
पापों के दल
दहलाए।

यह उदर देश की भूख जाननेवाला था,
जन-दुख-संकट ही इसका नित्य नेवाला था,
इसने पीड़ा बहु बार सही अनशन प्रण की,
आघात गोलियों
के ओड़े
बाएँ-दाएँ।

यह छाती परिचित थी भारत की धड़कन से,
यह छाती विचलित थी भारत की तड़पन से,
यह तनी जहाँ, बैठी हिम्मत गोले-गन की,
अचरज ही है,
पिस्तौल इसे जो
बिठलाए।

इन आँखों को था बुरा देखना नहीं सहन,
जो नहीं बुरा कुछ सुनते थे ये वही श्रवण,
मुख यही कि जिससे कभी न निकला बुरा वचन,
यह बंद-मूक
जग छलछुद्रों से
उकताए।

ये देखो बापू की आजानु भुजाएँ हैं,
उखड़े इनसे गोराशाही के पाए हैं,
लाखों इनकी रक्षा-छाया में आए हैं,
ये हाथ सबल
निज रक्षा में
क्यों सकुचाए।

यह बापू की गर्वीली, ऊँची पेशानी,
बस एक हिमालय की चोटी इसकी सानी,
इससे ही भारत ने अपनी भावी जानी;
जिसने इनको वध करने की मन में ठानी
उसनें भारत की क़िस्मत पर फेरा पानी;
इस देश-जाति
के हुए विधाता
ही बाएँ।

५६

वीभत्स वदन सबका मरने पर हो जाता,
लेकिन, देखो, बापू का चेहरा मुसकाता,
किस पद-पदवी को पहुँच गए जीवन तजकर
जो उनके आनन
पर विंबित
उल्लास हुए।

प्रभु अर्पित जिसने अपनी आत्मा जानी थी,
क्या नहीं ज़िंदगी ही उसकी क़ुर्बानी थी,
पर बेखटके, बेख़ौफ़ शहादत की हज कर
वे आज शहीदों के
दल में भी
ख़ास हुए।

इच्छा थी उनकी चलें गोलियाँ तड़-तड़-तड़,
वे करें हृदय से स्वागत उनका हँस-हँसकर,
हत्यारे के भी लिए दुआएँ हों मुँह पर
वे आज कठिनतम
इम्तहान में
पास हुए।

६०

जिस संध्या को बापू जी का वलिदान हुआ,

बल्लभ भाई का दिल्ली से व्याख्यान हुआ--

· · · · इससे अच्छा था उसी समय वे मर जाते

जब उनका पिछला

अनशन व्रत था

ठना हुआ।

अपने जीवन भर वे वलि-पथ के राही थे,
संतों के बाने में वे एक सिपाही थे,
सरदार समझने में तुम कैसे चूक गए,
रण-प्रांगण में वे मरने के उत्साही थे;
बिस्तर पर मरकर कभी नहीं वे मुसकाते,
वे ख़ुश थे देख
लहू से तन-पट
सना हुआ।

यदि सूख-सूख वे बिस्तर के ऊपर मरते,
अपनी लाचारी एक जगह साबित करते;
'पशुता से दानवता से पग-पग पर लड़ते,
वे जय-पथ पर ही बढ़ते डग पर डग धरते,
चाहे जितने दिन वे जग में जीने पाते'—
घोषित करता है
घायल सीना
तना हुआ।

६१

राम हरे, हे राम हरे,
राम हरे, हे राम हरे !

जीवन के संयम-साधन से
काम न जो वे कर पाए,
बापू के होठों पर छाई यह अंतिम मुसकान करे !
राम हरे, हे राम हरे,
राम हरे, हे राम हरे !

जीवन के श्रम-अश्रुकणों से
ताप न जो वे हर पाए,
बापू की पावन छाती के लोहू का यह दान हरे !
राम हरे, हे राम हरे,
राम हरे, हे राम हरे !

यह विशुद्ध बलिदान देश में
नई चेतना भर जाए,
महापुरुष का महामरण यह भारत का कल्याण करे !
राम हरे, हे राम हरे,
राम हरे, हे राम हरे !

*

६२

यह कौन चाहता है बापू जी की काया
कर शीशे की ताबूत-बद्ध रख ली जाए,
जैसे रक्खी है लाश मास्को में अब तक
लेनिन की, रशिया
के प्रसिद्धतम
नेता की ।

हम बुत-परस्त मशहूर भूमि के ऊपर हैं,
शव-मोह मगर हमने कब ऐसा दिखलाया,
क्या राम, कृष्ण, गौतम, अशोक या अकबर की
हम अगर चाहते
लाश नहीं रख
सकते थे ।

आत्मा की अजर-अमरता के हम विश्वासी,
काया को हमने जीर्ण वसन बस माना है,
इस महामोह की बेला में भी क्या हमको
वाजिब अपनी
गीता का ज्ञान
भुलाना है ।

काया आत्मा को धरती माता का ऋण है,
बापू को अपना अंतिम क़र्ज़ चुकाने दो,
वे जाति, देश, जग, मानवता से उऋण हुए,
उनपर मृत मिट्टी
का ऋण मत
रह जाने दो ।

रक्षा करने की वस्तु नहीं उनकी काया,
उनके विचार संचित करने की चीज़ें हैं,
उनको भी मत जिल्दों में करके बंद धरो,
उनको जन-जन
मन-मन, कण-कण
में बिखराओ ।

६३

पावन जमुना का आया लोटे भर पानी,
क्या पूत बनेंगे इससे ही वे वलिदानी,
जो अपने खोजी और साहसी जीवन में
पावनता के
गहरे सागर सब
थहा गए।

जो मिला उन्होंने कब अपने तक ही रक्खा,
उसका सारे भारत ने, जग ने रस चक्खा;
बे भेद-भाव जिसमें सब मज्जन-पान करें,
अपने अंतर से
सरिता ऐसी
बहा गए।

जिनको छूने से हुए अपावन भी पावन,
युग के अछूत हैं आज कहे जाते हरिजन;
उनके तन को हम शुद्ध करें किस पानी से,
अपने लोहू की
गंगा में वे
नहा गए!

६४

अब अर्द्धरात्रि है और अर्द्धजल बेला,
अब स्नान करेगा यह जोधा अलबेला,
लेकिन इसको छेड़ते हुए डर लगता,
यह बहुत अधिक
थककर धरती पर
सोता ।

क्या लाए हो जमुना का निर्मल पानी,
परिपाटी के भी होते हैं कुछ मानी,
लेकिन इसकी क्या इसको आवश्यकता,
वीरों का अंतिम
स्नान रक्त से
होता ।

मत यह लोहू से भीगे वस्त्र उतारो,
मत मर्द सिपाही का श्रृंगार बिगाड़ो,
इस गर्द-खून पर चोवा-चंदन वारो,
मानव पीड़ा प्रतिबिंबित ऐसों का मुँह,
भगवान स्वयं
अपने हाथों से
धोता ।

६५

बंदीख़ाने में बा जब स्वर्ग सिधारीं,
लोगों ने उनकी अंतिम सेज सँवारी,
गंभीर बहुत होकर बापू यों बोले,
सोने दो बा को
बिस्तर पर
सरकारी ।

इन शब्दों के अंदर वेदना भरी थी,
अक्षर-अक्षर के अंदर आन खरी थी,
मृत बंदी के क्यों कोई बंधन खोले,
अभिमान बनाए
रख सकती
लाचारी ।

तुमने क्यों लोहू वाले वस्त्र उतारे,
वे होंगे उनको सबसे ज़्यादा प्यारे,
वे बोल अगर सकते तो निश्चय कहते,
दो फूँक मुझे इनको ही तन पर धारे,
इनमें मैंने जीता
रण सबसे
भारी ।

वह वस्त्र नहीं, सेनानी का बाना था,
वह वस्त्र नहीं, अभिमानी का बाना था,
अपनी इस अंतिम महाविजय यात्रा में
उनको वीरों के बाने में जाना था;
क्यों तुमने ख़ून
हटाया, मिट्टी
झाड़ी ।

हम यादगार का मोह लिए थे मन में,
अपने बापू का छोह लिए थे मन में,
झोली तो ख़ूब सम्हाली, हम हैं भोले,
झोली के अंदर
की सब दौलत
हारी ।

६६

यह बापू जी की उज्ज्वल निर्मल चादर है,
यह दोष हमारा है जो धब्बा इसपर है,
यह दाग़ ख़ून का दौड़ रहा है खाने को,
जो देख न इसको
सिहरे, महा
अधम होगा।

इस धब्बे पर दुनिया भर का आँसू झड़ता,
लेकिन इसकी रंगत में फ़र्क़ नहीं पड़ता,
यह आँखों में चुभता, दिल के अंदर गड़ता,
इसके ऊपर
वर्षों तक मातम-
ग़म होगा।

यह किसी संग्रहालय में रख दी जाएगी,
करतूत हमारी भावी को बतलाएगी,
नस्लें दर नस्लें इस कृति पर पछताएँगी,
इस महापाप से, पर, छुटकारा पाने को,
शायद सदियों
का पछतावा भी
कम होगा।

६७

हो रात बज्र की, तो भी कट जाती है,
अरथी की बेला निकट चली आती है,
आओ बापू को अंतिम वस्त्र पिन्हाएँ,
आओ बापू पर
अंतिम फूल
चढ़ाएँ ।

वे कर्म क्षेत्र में थे जिस दिन से आए,
थे उस दिन से ही सिर पर कफ़न बँधाए,
हर बाज़ी पर थे अपने प्राण लगाए,
वे रहे मौत को
ही सर्वदा
डराए ।

कुछ उल्टा हमको काम आज करना है,
बापू को तो अब कभी नहीं मरना है,
अब वे अमरों में अपना नाम लिखाए,
आओ, अब उनके
सिर से कफ़न
हटाएँ ।

६८

जो जीवन भर केवल शूलों से खेला,

उसके ऊपर माला फूलों का रेला,

बापू की अरथी अब सज्जित होती है,

अब निकट आ गई

महाविदा की

बेला ।

जिसने कंधों पर देश उठाया सारा,
आओ, कंधों का अब दो उसे सहारा,
लाखों उसकी अरथी के आगे-पीछे,
वह महातीर्थ को
जाता किंतु
अकेला ।

रंकता देख जिसकी रंकता लजाती,
राजसी ठाठ से उसकी अरथी जाती,
सुख-स्वर्ग बीच अब वह बिठलाया होगा,
जिसने था अपने
जीवन भर दुख
झेला ।

उसकी सच्ची सत्ता अब और कहीं है,
चमड़ी, हड्डी, पसली के बीच नहीं है,
वह एक हमें संकेत नहीं करता है,
हम लाख लगाएँ
उसके शव पर
मेला ।

६९

पृथ्वी बापू को देती आज विदाई,
बज रही स्वर्ग में स्वागत की शहनाई,
है दबा दुःख से भारी धरती का मन,
नभ का उमंग से,
सुख से
उभरा होगा।

है कौन नहीं अंतिम दर्शन का इच्छुक,
है कौन नहीं पहले दर्शन को उत्सुक,
देने को विदा विकल बसुधा के जन गण,
स्वागत में देवों
का दल
उमड़ा होगा।

संसार विदा के उनपर फूल चढ़ाता,
सुरपुर होगा स्वागत में पुष्प बिछाता,
हो गए आज सूने पृथ्वी के मधुवन,
स्वागत में नंदन
कानन
उजड़ा होगा।

७०

जो मंत्र जपा था उसने अपने जीवन भर
क्या भूल गया होगा सुरपुर की ड्योढ़ी पर ?--
उसके इंगित पर ताज पाँव पर आ गिरता,
लाया स्वराज्य,
था उसे चाहिए
राज्य नहीं।

क्या बिलम सकेगा वह नंदन के आँगन में ?
क्या बाँध सकेगी मुक्ति उसे निज बंधन में ?
कामये न स्वर्गं नापुनर्भवम् कण-कण में
गुंजित हो टिकने
देगा उसके
पाँव कहीं ?

जग का पथ ही फिर वह कर्मठ अपनाएगा,
परलोक-विभव को यह कहकर ठुकराएगा--
सुख-सार भोगना तब तक है केवल जड़ता,
दुख तप्त प्राणियों
से है जब तक
आर्त मही।

७१

बेशक वह सबसे ऊँचे पद का अधिकारी,

करदे उसपर अपना सब वैभव बलिहारी,

रीझेगा, पर, उनपर, कब तक यह संसारी,

उसने सीखा है

सुख, संपति को

ठुकराना।

दो-चार दिवस तू कर ले उसकी मेहमानी,
यदि रुक सकता है इतने दिन वह वरदानी,
यह भूमि करेगी फिर से उसकी अगवानी,
उसका बाना—
दुख-दैन्य मनुज के
अपनाना ।

उसका सुख है अन्याय पाप से लड़ने में,
संताप त्रस्त-संतप्त जनों का हरने में,
मानवता के गहरे घावों को भरने में,
वह क्या अपने को स्वर्ग-सुधा में खोएगा,
है ज्ञात जिसे
पृथ्वी का विष से
अकुलाना ।

जग बीच घृणा पशुता के राग सुनाएगी,
भू पर हिंसा निर्लज्ज नृत्य दिखलाएगी,
निर्द्वंद दनुजता दंभी दुंद मचाएगी,
वह टाँग पसारे देवपुरी में सोएगा !
तूने बापू को,
स्वर्ग, नहीं है
पहचाना ।

७२

श्री राम नाम सत्य है,
श्री राम नाम सत्य है !

जनाज़ा देश का चला,
सुहाग जाति का लुटा,
भरा विषाद से गला,
मगर परंपरा से हम जो साथ अरथियों के हैं
पुकारते, पुकारते चलें अभय ।
श्री राम नाम सत्य है,
श्री राम नाम सत्य है !

प्रतीक राम नाम का,
जो देश के पिता थे उनके
था बड़े ही काम का,
तमाम राज़ उनकी ज़िंदगी का इसमें था छिपा।
वो मिट गए, ये है बना,
वो हट गए, ये है अजय।
श्री राम नाम सत्य है,
श्री राम नाम सत्य है!

जो धर्म की पवित्रता,
जो कर्म की अलिप्तता,
जो सत्य की कठोरता,
जो प्रेम की विभोरता,
सभी का एक नाम राम, वह सदा अजर-अमर।
पिता गिरे, मरे, मगर
न राम नाम पर असर,
वो सत्य सत्य ही नहीं
जिसे कि छू सके समय;
श्री राम नाम सत्य है,
श्री राम नाम सत्य है!

७३

तुम बढ़े चिता की ओर चले जाते हो,
तुम कोटि-कोटि के मन को कलपाते हो,
व्यवहार तुम्हारा यह क्यों निर्मोही-सा,
क्षण एक ठहरकर
इतना तो
बतलाओ ।

मुर्दा मिट्टी को तुमने मर्द बनाया,
मुर्दों से तुमने जीवन युद्ध कराया,
इस चमत्कार से दुनिया को चौंकाया,
कुछ शक्ति करिश्मा
आज हमें
दिखलाओ ।

जिस भाँति मौत, हे बापू, तुमने पाई,
उसने सबको ईसा की याद दिलाई,
तीसरे दिवस उठ बैठे थे फिर ईसा,
इस चिता-भस्म से
तुम भी
शीश उठाओ ।

७४

तुम बड़ा उसे आदर दिखलाने आए,
चंदन, कपूर की चिता रचाने आए,
सोचा, किस महारथी की अरथी आती,
सोचा, उसने किस रण में प्राण बिछाए?

लाओ वे फरसे, बरछे, बल्लम, भाले,
जो निर्दोषों के लोहू से हैं काले,
लाओ वे सब हथियार, छुरे, तलवारें,
जिनसे बेकस-मासूम औरतों, बच्चों,
मर्दों के तुमने लाखों शीश उतारे,
लाओ बंदूकें जिनसे गिरें हज़ारों,
तब फिर दुखांत, दुर्दांत महाभारत के
इस भीष्म पितामह की हम चिता बनाएँ।

जिससे तुमने घर-घर में आग लगाई,
जिससे तुमने नगरों की पाँत जलाई,
लाओ वह लूकी सत्यानाशी, घाती,
तब हम अपने बापू की चिता जलाएँ।

वे जलें, बनी रह जाए फ़िरक़ेबंदी,
वे जलें मगर हो आग न उसकी मंदी,
तो तुम सब जाओ, अपने को धिक्कारो,
गांधी जी ने बेमतलब प्राण गंवाए।

७५

बापू जी अपनी चिता सेज पर लेटे,
हो, रामदास, माना, तुम उनके बेटे,
पर हम भी तो उनके कुछ और नहीं हैं,
मत दाह कर्म,
भाई, तुम करो
अकेले।

सच, दाह क्रिया करना बेटे का हक़ है,
हम सभी पुत्र हैं उनके, किसको शक है,
लूकी में लो हम सब हैं हाथ लगाते,
हम सब उनकी
बाहों के खाए-
खेले।

हो अलग-अलग थे बैर-विरोध बढ़ाते,
अब एक हुए हम एक पिता के नाते,
आओ आपस में मिल-जुलकर रहने की,
इस पाक चिता
के ऊपर क़समें
ले-लें।

७६

जिस मिट्टी ने भारत के भाग्य सँभाले,
हे अग्निदेव, वह तेरे आज हवाले,
उसके प्राणों की ज्योति करे नभ जगमग,
तन की ज्वाला
से ज्योतिर्मय हो
भूतल।

हे अग्निदेव, तुम जिसको भी छू देते,
उसको अपने सा ही पावन कर लेते,
बापू की पावन काया के कण-कण को
कर दो शुचितर,
शुचितम, उज्ज्वल,
चिर निर्मल।

उनके विद्युत्-संदेश मंत्र से गर्भित,
हो एक-एक कण पवन-पंख आरोहित
पहुँचे भारत-जग के हर घर-आँगन में,
नवयुग,
नव मानवता का
नूतन संबल।

७७

दी रामदास ने लगा चिता में लूकी,
लपटों ने ली अब घेर देह बापू की,
उठ धुआँ गगन के ऊपर चढ़ता जाता,
जैसे वे ही
आकाश मार्ग से
जाते ।

वे रमे हुए थे ऐसे हर क्षण-कण में,
था देश साँस लेता उनकी धड़कन में,
वे एक बार भी नहीं देखते फिरकर,
क्या टूट गए
बरसों के जोड़े
नाते ।

वे लगे रहे सब दिन तप में, साधन में,
संपूर्ण सिद्धि वे पा न सके जीवन में,
हैं नहीं हार वे माने हुए मरण में,
यह चिता नहीं है, बापू की धूनी है,
वे हैं मसान पर
बैठे अलख
जगाते ।

७८

रम गए राम थे बापू जी के जीवन में,
कितने रूपों में मिले उन्हें अंतिम क्षण में,
कर्मानुरूप ही नाम चाहिए था होना,
लेकिन हत्यारा
उनको नाथू
'राम' मिला।

गोली की चोटों को अपने तन पर सहते,
'उफ़' 'हाय हाय' 'मर गए' 'मार डाला' कहते,
इतनी पीड़ा में राम कृपा से शांत रहे,
उनके मुँह से
केवल 'हे राम-
राम' निकला।

अंत्येष्टि क्रिया करने को आते 'राम' दास,
क्या इसी दिवस को मिला उन्हें था नाम ख़ास,
हैं खड़े 'राम'धन बने पुरोहित वेदी पर,
जो उन्हें रहे हैं
कर्मकांड की
विधि बतला।

७६

जमुना के तट की छोटी सी वेदी पर
जो चिता जल रही राष्ट्र पिता की भर-भर,
दिल्लीवाले ही नहीं देखते उसको,
वह दुनिया के
हर कोने से
दृग्गोचर ।

सैकड़ों-हज़ारों मीलों की दूरी पर,
जो आज हृदय रखनेवाले नारी; नर,
इस महाचिता से उठनेवाली ज्वाला
का अनुभव करते
हैं अपने तन-
मन पर ।

सच तो यह है हर एक हृदय के अंदर,
जग पड़ी चिता है सहसा एक भभककर,
कुछ मूल्यवान-सा, संचित-सा, सेवित-सा,
मिल गया राख में
है जिसमें
जल-भुनकर ।

८०

भेद अतीत एक स्वर उठता—
नैनं दहति पावकः . . .
निकट, निकटतर और निकटतम
हुई चिता के अरथी, हाय,
बापू के जलने का भी अब, आँखें, देखो दृश्य दुसह ।
भेद अतीत एक स्वर उठता—
नैनं दहति पावकः . . .

चंदन की शैया के ऊपर
लेटी है मिट्टी निरुपाय,
लो अब लपटों से अभिभूषित चिता दहकती है दह-दह ।
भेद अतीत एक स्वर उठता—
नैनं दहति पावकः . . .

अगणित भावों की झंझा में
खड़े देखते हम असहाय,
और किया भी क्या . . ऽ जाय,
क्षार-क्षार होती जाती है बापू की काया रह-रह ।
भेद अतीत एक स्वर उठता—
नैनं दहति पावकः . . .

८१

प्राचीन समय में जबकि हमारे पूर्वज
दुर्भाग्य-काल के चक्कर में पड़ते थे,
वे अनुष्ठान कर बड़े-बड़े यज्ञों का
इस भाँति शांति का पाठ किया करते थे
द्यो: शांति:
अंतरिक्षग्वं शांति:
पृथिवी शांति:
आप: शांति:
ओषधय: शांति:
वनस्पतय: शांति:
विश्वेदेबा शांति:
ब्रह्म शांति:
सर्वग्वं शांति:
शांतिरेव शांति:
सा मा शांति:

यह चिता नहीं ह एक यज्ञ की ज्वाला
जिसमें आहुति बापू का तन पावनतम,
हो महायज्ञ यह विफल न हे परमेश्वर,
यह शांति पाठ करते हैं मिलकर सब हम--

भगवान शांतिः
अल्लाह शांतिः
वाह गुरु शांतिः
आज़ाद हिंदुस्तान शांतिः
पाकिस्तान शांतिः
काश्मीर शांतिः
हैदराबाद शांतिः
फ़िरक़ेबंदी शांतिः
हिंदू शांतिः
सिक्ख शांतिः
मुसलमान शांतिः
समस्त मानव जाति शांतिः
महात्मा गांधी शांतिः
ओ३म्
शांतिः शांतिः शांतिः !

८२

अब बिखर गई बापू की हड्डी-हड्डी,

अब होने को है महाचिता यह ठंडी,

उस महज्ज्योति का अंत, हाय, क्या होगा,

इस दुप-दुप करती,

दबती जाती

लौ में।

गांधी से साधक और आत्म-जेता की,
गांधी से दूरंदेश महानेता की,
जो मौत नहीं, वलिदान उपेक्षित करतीं,
जग से मिट जाया
करती हैं वे
क़ौमें।

घटना महान है बापू जी का मरना,
है घाव बड़ा ही भारी हमको भरना,
कुछ करना है, कुछ करना है, कुछ करना,
बह नहीं सकेंगे
अब हम पिछली
रौ में।

यदि साहस है तो हम लें हाथ मशालें,
इस ज्वाला से हम फिर उनको सुलगा लें,
कालिमा-कुहू में उनको ऐसा बालें ?
वह बदल जाय
पूरब से फटती
पौ में।

८३

इस अस्थि-राख में तन का मंदिर ढहा-दहा,
इन हड्डी के टुकड़ों को किसने फूल कहा,
क्यों कहा, सभी को अनजाना यह भेद रहा,
सार्थकता इसकी
इस वेदी पर
पहचानो।

अब बुझी चिता से फूलों को हम चुनते हैं,
कितनी सुधियों का ताना-बाना बुनते हैं,
उनका जीवन संदेश राख में सुनते हैं,
वे कण-कण से
कानों में कहते
हैं मानो--

तुम मुझको गोली मार धरा पर लुढ़काओ,
तुम मेरे ही लोहू से मुझको नहलाओ,
तुम मेरे चारों ओर आग भी दहकाओ,
लेकिन मैं दूंगा
फूल तुम्हें
निश्चित जानो!

८४

हर आग यहाँ जो जलती है, बुझ जाती है,
अंगारों का बस राख पता बतलाती है,
जो चिता यहाँ कल धू-धू करके धधकी थी,
अब राख; कोयलों,
फूलों में
अवशेष रही।

जो कंचन तन इसमें रक्खा था लुप्त हुआ,
मिट्टी से आया था, मिट्टी में गुप्त हुआ,
इस राख-फूल की गंगा-जमुना अधिकारी,
पर हुई सदा को
इस वेदी की
पाक मही।

आओ, इस वेदी के आगे मत्था टेकें,
जो फेंक सकें मन के ओछेपन को फेंकें,
यह पावन भारत की पावनतर पृथ्वी है,
इसने उसके पावनतम साधक-सन्यासी
के अंतिम तप की
ज्योति बिखेरी,
आँच सही।

८५

भारत का यह सिद्ध तपोधन,
खरा बना जीवन का कंचन,
करता था सब जग में वितरण;
दीनों का वह वेश किए था,
दीन नहीं था,
वह था दाता ।

हुई तपस्या-ज्वाल अलक्षित,
हुआ तपस्वी शून्य तिरोहित,
सोना मिट्टी में परिवर्तित,
चिता-राख के आगे फिर भी
हाथ विश्व
सारा फैलाता ।

मौन कभी बोला करता है,
भावों को तोला करता है,
अंतर में डोला करता है,
बोल कहीं से सकते बापू
तो यह कहते,
मन में आता—

तुमने अपने कर फैलाए,
लेकिन देर बड़ी कर आए,
ख़ाली हाथ न जाने पाए,
जो भी मेरे दर पर आए,
कंचन तो लुट चुका, पथिक, सब,
लूटो अब मैं
राख लुटाता ।

८६

भारत के सब प्रसिद्ध तीर्थों से; नगरों से
है आज आ रही माँग तपोमय गांधी की
अंतिम धूनी से राख हमें भी चुटकी भर
मिल जाए जिसमें उसे सराएँ ले जाकर
पावन करते
निकटस्थ नदी,
नद, सर, सागर।

अपने तन पर अधिकार समझते थे सब दिन
वे भारत की मिट्टी, भारत के पानी का,
जो लोग चाहते हैं ले जाएँ राख आज,
है ठीक वही जिसको चाहे सारा समाज,
संबद्ध जगह जो हो गांधी की मिट्टी से
साधना करे
रखने को उनकी
कीर्ति-लाज।

हे देश-जाति के दीवानों के चूड़ामणि,
इस चिर यौवनमय, सुंदर, पावन बसुंधरा,
की सेवा में मनुहार महज़ करते-करते
दी तुमने अपनी उमर गँवा, दी देह त्याग;
अब राख तुम्हारी आर्यभूमि की भरे माँग,
हो अमर तुम्हें खो
इस तपस्विनी
का सुहाग।

८७

जमुना तट से संबद्ध सदा था वंशी-वट,
वंशी-वट से संबद्ध सदा था वंशी-नट,
जिसकी कर-मुरली के स्वर पर मोहित होकर
भारत की आत्मा कालिंदी के आँचल में
रस-राग-रास-
रंजित होकर थी
नाच उठी।

उस शरच्चंद्रिका में विथकित सा जमुना-जल,
करता था अब तक आँखों में झलमल-झलमल,
फैली सिक्ता की रजत-धवल चादर सी सुधि
बाँधे पहुँची थी भारत के हर कोने में;
सहसा उसपर
दृढ़ काली रेखा
खींच उठी।

अब जमुनातट का नाम लिया जब जाएगा,
कैसे भारत को ध्यान नहीं यह आएगा,
जिस तट के कण-कण में गोपी-गोपी मोहन
के पग-पायल की झंकृतियाँ प्रतिध्वनित हुईं,
उस तट पर ही दूसरे देश के 'मोहन' की
दिवसांत चिता से
चट-चट करके
आँच उठी।

८८

जिसको अपनी रक्षा के हित लघु तिनका भी
रखना था अपने पास गवारा नहीं कभी,
उसकी काया की चिता भस्म की रक्षा को
हैं टैंक खड़े,
है खड़ा रिसाला,
फ़ौज खड़ी।

हम काश उन्हें जीते में यों रक्षित रखते,
उनकी मिट्टी की रक्षा का अब नहीं काम;
यह टैंक-रिसाले खड़े समादर देने को,
उनकी मिट्टी को
बंदूकें
करतीं सलाम ।

जब फूल-विमान बढ़ेगा गंगा के तट को
तब तोपें अस्सी बार दगाई जाएँगी,
जब अस्थि विसर्जन होगा बिगुल बजेंगे तब,
यह बातें क्या
बापू के मन को
भाएँगी ।

यह राज प्रदर्शन देख अगर बापू सकते
शायद खुश होते वे, शायद होते उदास,
इंसानों की नादानी पर शायद रोते,
गूँजता गगन में
शायद उनका
अट्टहास ।

८६

है तीर्थराज की सारी जनता उमड़ पड़ी,
स्टेशन से संगम तलक ठसाठस भीड़ खड़ी,
मुद्रा उदास, गंभीर; ग्लानि-कौतूहलमय,
युग के दधीचि
की आज हड्डियाँ
आती हैं।

ऊँचे विमान पर पुष्प सुसज्जित एक पात्र,
क्या बापू का अवशेष ताम्र का पात्र मात्र !
मन करता है विद्रोह मानने से ऐसा,
आँखें इसपर
विश्वास नहीं
कर पाती हैं।

फिर-फिर करते हैं सुमन-वृष्टि आकाश-यान,
उस अस्थि-शेष को अंतिम श्रद्धांजलि प्रदान,
दिखलाई देती जल की श्यामल-धवल धार,
अंतिम यात्रा
अंतिम मंज़िल
पा जाती है।

यमुना गंगा के कानों में कुछ कहती हैं,
गंगा सुनकर क्षण भर को ठिठकी रहती हैं,
बापू के पावन फूलों को ले आँचल में
यमुना सकुचाती
हैं, गंगा
शरमाती हैं।

९०

जब हुआ विसर्जित गांधी जी का शुभ्र फूल,
देदीप्यमान हो उठा सुरसरी का दुकूल,
ऐसी आभा से हुआ नीर जाज्वल्यमान,
आया मन में कूदूँ धारा में, करूँ स्नान।

ज्योंही उतरा मैं अस्थिपूत गंगाजल में,
यह लगा कि जैसे बापू बैठे हैं तल में,
कर बंद नाक जब गोता मैंने एक लिया,
यह लगा देह पर हाथ उन्होंने फेर दिया।

फिर सुधि आई कुछ वर्ष पूर्व पूज्या बा की
भी अस्थि गई थी गंगा में ही पहुँचाई,
संगिनी जवाहर की, सुकोमला कमला की,
गोखले, तिलक की अस्थि यहीं पर थी आई।

फिर अपने माता-पिता मुझे आ गए याद,
फिर आए मन में कितने पूर्वज पूज्यपाद,
जिनकी तन-रज से गंगा का कण-कण पवित्र,
लहराया लहरों में अतीत होकर सचित्र।

फिर डुबकी ली तो लगा कि जैसे एक साथ
मेरे सिर पर शत-शत पुरखों के लगे हाथ,
जल पुनः-पुनः ले मैंने की अंजलि प्रदान—
मिल गया एक मेरी शंका का समाधान।

कहता था, कितने लोग देश के हैं अजान,
जो लाख-लाख आते बस करने को नहान,
क्या गुण रखता है इस गंगा का नीर-कीच,
जो दूर-दूर से लाता इनको खींच-खींच।

मिल गया भेद अब मुझको इस आकर्षण का,
मिल गया भेद अब मुझको जल से तर्पण का,
है नहीं देह मेरी इस जल से सिक्त आज,
मैं एक नए ही अनुभव से अभिषिक्त आज।

ओ गंगा, है तू इस भारत की राष्ट्र नदी,
माने, मत माने कोई तुझको विष्णुपदी,
तेरे पूर्वज पुण्योदक में कर पूत स्नान,
हम सदा देश-गौरव अतीत का करें ध्यान,
पाई थाती को करें और भी शुचि समृद्ध,
सत्पुरुषों की हम हों सच्ची संतान सिद्ध !

९१

थैलियाँ समर्पित कीं सेवा के हित हज़ार,
श्रद्धांजलियाँ अर्पित कीं तुमको लाख बार,
गो तुम्हें न थी इनकी कोई आवश्यकता,
पुष्पांजलियाँ भी तुम्हें देश ने दीं अपार;
अब, हाय, तिलांजलि
देने की आई बारी।

तुम तिल थे लेकिन रहे झुकाते सदा ताड़,
तुम तिल थे लेकिन लिए ओट में थे पहाड़,
शंकर-पिनाक-सी रही तुम्हारी जमी धाक,
तुम हटे न तिल भर, गई दानवी शक्ति हार;
तिल एक तुम्हारे जीवन की
व्याख्या सारी।

तिल-तिल कर तुमने देश कीच से उठा लिया,
तिल-तिल निज को उसकी चिंता में गला दिया,
तुमने स्वदेश का तिलक किया आज़ादी से,
जीवन में क्या मरकर भी एक तिलस्म किया;
क़ातिल ने महिमा
और तुम्हारी विस्तारी।

तुम कटे मगर तिल भर भी सत्ता नहीं कटी,
तुम लुप्त हुए, तिल मात्र महत्ता नहीं घटी,
तुम देह नहीं थे, तुम थे भारत की आत्मा,
ज़ाहिर बातिल थी, बातिल ज़ाहिर बन प्रगटी;
तिल की अंजलि को आज
मिले तुम अधिकारी।

६२

नाथू ने बेधा बापू जी का वक्षस्थल,
हो गई करोड़ों की छाती इससे घायल,
यदि कोटि बार वह जी-जीकरके मर सकता,
तो कोटि मृत्यु
का दंड भोगता
वह राक्षस ।

लेकिन वह केवल एक बार मर सकता है;
वह जीता है, कोई साबित कर सकता है ?
जीता होता तो महापाप ऐसा करता,
पाषाण वहाँ है
जहाँ चाहिए
था मानस ।

वह एक बार भी तो मरने के योग्य नहीं,
ऐसे पिशाच से परिचित ही थी नहीं मही,
वर्ना कुछ उसके लिए सज़ाएँ ढुंढवाती,
ऐसों को केवल
क्षमा संत की
सकती डँस ।

९३

छतरी, समाधि जो तुम उनकी बनवाते हो,
उससे अपनी नासमझी ही दिखलाते हो,
जग याद करेगा उनको चूने-पत्थर से ?
क्या और नहीं
कुछ उनकी याद
दिलाने को।

उनकी तो सबसे बड़ी याद आज़ादी है,
फिर सत्य-अहिंसा है, चरखा है, खादी है,
हरिजन हैं जिनके लिए बने वे खुद हरिजन,
हिंदू-मुस्लिम,
वलि हुए जिन्हें
मिलवाने को।

वे बना गए खुद जग में अपनी यादगार,
इससे बढ़कर भी क्या हो सकता था मज़ार—
हर पलक विकल, पाँवड़ा बने उनके पथ में,
हर दिल उत्सुक
उनका आसन
बन जाने को।

६४

अब कहीं स्तंभ की, कहीं स्तूप की तैयारी
औ' किसी जगह पर मूर्ति गढ़ी जाती भारी,
संस्थाओं, सड़कों से जुड़ते हैं नाम कहीं,
हैं कहीं
याद में उनकी
बसते ग्राम-नगर।

उस महा महिम की यादगार बनवानी है,
बोलो, तुमने अपनी ताक़त पहचानी है,
ईंटे-गारे से मत अपने को धोखा दो,
वह बन सकती है
सत्य-अहिंसा
के बल पर।

यदि गांधी को हम अपने दिल में बिठला लें,
यदि गांधीपन को हम जीवन में अपना लें,
उनकी सच्ची स्मृति, विश्व-शांति के मंदिर की
हम नींव जमाने
में रख पाएँगे
पत्थर।

९५

रावण था राम विरोधी बनकर आया,
कंस ने कृष्ण जी से था बैर बढ़ाया,
जीसस को, उनके प्राणों के प्यासों को
जूडस ने बेंच
दिया था तीस
टके पर।

इस अनुप्रास का जोड़ा फिर है बनता,
गोडसे हुआ गांधी-बाबा का हंता,
है जूडस, रावण, कंस अर्थ अनजाना;
गोडसे अर्थ में
भी है महा
भयंकर।

गोडसे वंश में जन्मा था वह विषधर,
इसलिए डँसे वह भारत-गौ को शुचितर,
अपने दानों में कामधेनु से थे वे,
सीधे-सादे
वे थे गौ से भी
बढ़कर।

९६

पी गए राम के वाण रक्त रावण का,
हो गई राख उसकी सोने की लंका,
धर केश कंस का वंशीधर ने पटका,
ले खड्ग उसीका
उसका शीश
उतारा।

जीसस को जब ले गई फ़ौज हत्यारी,
अनुताप हुआ जूडस के मन में भारी,
उसने वे पापी तीस टके लौटाए,
फिर आत्मघात करके
वह स्वर्ग
सिधारा।

बह गई राख नद-नदियों में गांधी की,
गति उसी भाँति है नाथू की छाती की;
आत्मा-शरीर का युद्ध हुआ था उस दिन,
जो प्रगट हुआ
है, नहीं सत्य
वह सारा।

६७

बापू दुनिया का कीचड़-काँदो झेल गए,
अपने लोहू के रँग से होली खेल गए,
संध्या की लाली छिपी, लजाई, शरमाई;
ऐसी चमकी
रंजित हो चादर
धरती की।

फिर जली चिता, ऐसी इसकी फैली ज्वाला,
कोने-कोने से निकला मातम-तम काला,
बुक्का-अबीर सी राख उड़ी नभ में छाई,
बापू ने, लो,
छू ली सीमाएँ
मस्ती की।

अब कहाँ होलिका की लपटों में दमक रही,
अब कहाँ रंग-रोली-गुलाल में चमक रही,
अब कहाँ इत्र, चंदन, गुलाब में गमक रही,
कर गए सबों की
होली वे
फीकी-फीकी।

९८

फगुआ-कबीर से सड़कों को गुंजित कर।
तुम लिए हाथ में रंग-अबीर भरी झोली,
उच्छृंखलता - मतवालापन साकार बने,
आए हो मेरे
द्वार खेलने
को होली।

मैं तुम्हें देखकर आज अचंभे में डूबा,
बापू का वध तुम इतनी जल्दी भूल गए !
जो जगह हुई थी गीली उनके लोहू से
हे राम, अभी तो वह भी सूख नहीं पाई,
जिस वेदी के ऊपर थी उनकी लाश जली
या ख़ुदा, अभी तो वह भी ठंडी नहीं हुई;
बापू का वध तुम इतनी जल्दी भूल गए !

गज़ भर की छाती हुई हमेशा है मेरी
अल्हड़ यौवन की हास-लास, रँगरलियों पर,
पर तुम्हें देखकर आज चाहता मन मेरा,
दरवाज़ा कर लूँ
बंद तुम्हें
करके बाहर।

है आज दबा दुख से इतना अंतर मेरा,
मुझमें गुस्सा करने की क्षमता-शक्ति नहीं,
आती है मुझको याद एक बीती घटना,
मेरी माता का शव था घर में पड़ा हुआ,
था अमित[1] मस्त मेरा नटखट कल्लोलों में;
तुम सब हो मुझको आज अमित-से ही लगते,
बच्चो, तुमने अबतक समझी यह बात नहीं,
इस दीन देश की हानि हुई कितनी भारी!
जाओ, हो तुम्हें मुबारक होली बारबार,
खुश रहो, न देखो मेरी आँखों के आँसू,
बापू ने भी तो इसीलिए अपना जीवन
बलिदान किया, सुख-मुखरित हो भारत-आँगन।

---

[1] कवि का पुत्र, उस समय ढाई वर्ष का।

६६

बापू की हत्या के चालिस दिन बाद गया
मैं दिल्ली को; देखने गया उस थल को भी
जिसपर बापू जी गोली खाकर सोख गए,
जो रंग उठा
उनके लोहू
की लाली से।

बिरला-घर के बाएँ को है वह लॉन हरा,
प्रार्थना सभा जिसपर बापू की होती थी,
थी एक ओर को छोटी सी वेदिका बनी,
जिसपर थे गहरे
लाल रंग के
फूल चढ़े।

उस हरे लॉन के बीच देख उन फूलों को
ऐसा लगता था जैसे बापू का लोहू
अब भी पृथ्वी के ऊपर सूख नहीं पाया,
अब भी मिट्टी
के ऊपर
ताज़ा-ताज़ा है !

सुन पड़े धड़ाके तीन मुझे फिर गोली के
काँपने लगी पाँवों के नीचे की धरती,
फिर पीड़ा के स्वर में फूटा 'हे राम' शब्द,
चीरता हुआ विद्युत्-सा नभ के स्तर पर स्तर
कर ध्वनित-प्रतिध्वनित दिक्-दिगंत को बार-बार
मेरे अंतर में पैठ मुझे सालने लगा !......

१००

बिरलाघर से मैं उसी पंथ पर जाता हूँ,
जिससे बापू ने अपनी अंतिम यात्रा की,
जो पढ़ा पत्र में, सुना रेडियो से उस दिन
का हाल, आँख के
आगे फिर
चित्रित होता ।

चालिस दिन, चालिस रातें अबतक बीत चुकीं,
फिर भी इस पथ पर घनी उदासी छाई है,
पग-पग जैसे उस दिन की याद सँजोए है,
कण-कण जैसे
उस दिन की सुधि
में भीगा है।

दोनों बाज़ू में है वृक्षों की पाँत खड़ी,
मैंने इसको इससे पहले भी देखा था,
दब किसी भार से डाली-डाली झुकी हुई,
पत्ते-पत्ते
के ऊपर मातम
लिखा हुआ।

है नहीं बरसता मेह रात से दिल्ली में,
यह मार्ग बहाकर आठ-आठ आँसू कहता,
क्या इसी वास्ते था मेरा निर्माण हुआ,
मेरे ऊपर
से बापू की
अरथी जाए।

हँसता-हुलसाता बचपन इससे गुज़रेगा,
उन्मद यौवन आशा-सुख-सपनों को बुनता,
गुज़रेंगी कितनी बारातें, कितने जलूस,
सदियाँ पर सदियाँ भुला नहीं यह पाएँगी,
थी इसी राह
से बापू जी की
लाश गई।

१०१

हे राम खचित यह वही चौतरा, भाई,

जिसपर बापू ने अंतिम सेज डसाई,

जिसपर लपटों के साथ लिपट वे सोए,

ग़लती की हमने

जो वह आग

बुझाई।

पारसी अग्नि जो थे फ़ारस से लाए,
हैं आज तलक वे उसे ज्वलंत बनाए,
जो आग चितापर बापू के जागी थी
था उचित उसे
हम रहते सदा
जगाए ।

है हमको उनकी यादगार बनवानी,
सैकड़ों सुझावे देंगे पंडित-ज्ञानी,
लेकिन यदि हम वह ज्वाल जगाए रहते,
होती उनकी
सबसे उपयुक्त
निशानी ।

तम के समक्ष वे ज्योति एक अविचल थे,
आँधी-पानी में पड़कर अडिग-अटल थे,
तप की ज्वाला के अंदर पल-पल जल-जल
वे स्वयं अग्नि-से
अकलुष थे,
निर्मल थे ।

वह ज्वाला हमको उनकी याद दिलाती,
वह ज्वाला हमको उनका पथ दिखलाती,
वह ज्वाला भारत के घर-घर में जाती,
संदेश अग्निमय
जन-जन को
पहुँचाती ।

पुश्तहापुश्त यह आग देखने आतीं,
इससे अतीत की सुधियाँ सजग बनातीं,
भारत के अमर तपस्वी की इस धूनी
से ले भभूत
अपने सिर-माथ
चढ़ातीं ।

पर नहीं आग की बाक़ी यहाँ निशानी,
प्रह्लाद-होलिका की फिर घटी कहानी,
बापू ज्वाला से निकल अछूते आए,
मिल गईं राख-
मिट्टी में चिता
भवानी ।

अब तक दुहरातीं मस्जिद की मीनारें,
अब तक दुहरातीं घर-घर की दीवारें,
दुहरातीं पेड़ों की हर तरफ़ क़तारें,
दुहराते दरिया के जल-कूल-कगारे,
चप्पे-चप्पे इस राजघाट के रटत
जो लगे यहाँ थे चिता-शाम को नारे—
हो गए आज से बापू अमर हमारे,
हो गए आज से बापू अमर हमारे!.......

१०२

गांधी जी की हत्या के चालिस दिवस बाद
मैं हूँ कनाट सर्कस दिल्ली में खड़ा हुआ,
जो देख रहा हूँ अपने चारो ओर यहाँ,
उससे मन ही मन
हूँ लज्जा से
गड़ा हुआ।

हैं लगी हुई ऐशोइशरत की दूकानें,
है भरा माल जिनमें अमरीका, योरुप का,
यदि पैसा हो तो सब का सब ले लेने को
लगता आँखों से
ललचाया-सा
मन सबका।

नवयुवक विदेशी काट-छाँट के कपड़ों में
सिगरट सुलगाते घूम रहे हैं यहाँ-वहाँ,
महिलाएँ सज-धज में मेमों को मात किए
गिटपिट-गिटपिट
करती फिरती हैं
जहाँ-तहाँ।

मोटर गाड़ी, कपड़ा-स्वरूप धन या यौवन
कुछ न कुछ यहाँ हर एक दिखाने आया है,
यदि किसी बात से है उसका अभिमान तुष्ट,
तो किसी बात
के कारण वह
शरमाया है।

यह देख दुखित हो विविध विचारों में उलझा
अपने से, अपनी आँखों में आँसू भर-भर,
मैं पूछ रहा हूँ, क्या गांधी का देश यही !
क्या बापू की
पावन वलि का
है यही नगर !

१०३

यह दिल्ली कौरव-पांडव के बल-तेजों की,
चौहान, तुर्क, मुग़लों की औ' अंग्रेज़ों की,
आक्रमण, संधि, बलवों की, गोली मेज़ों की,
गोरी, बाबर
क्लाइव की,
ज़फ़र, जवाहर की।

इस दिल्ली ने तख़्तों का परिवर्तन देखा,
इस दिल्ली ने क़ौमों का संघर्षण देखा,
ज़ुल्मों का, पापों का नंगा नर्तन देखा,
यह बनी ज़मीन-
ज़ियारत भी
भारत भर की।

गुरु तेग़बहादुर दिल्ली में क़ुर्बान हुए,
औ' स्वामी श्रद्धानंद यहीं वलिदान हुए,
नंगे फ़क़ीर सरमद का भी सर यहीं कटा,
अर्पित इसको ही बापू जी के प्राण हुए;
दे रक्त शहीदों ने
इसकी मिट्टी
तर की।

१०४

यदि मौत बदी थी बापू की गोली खाकर,
तो हिंदू के ही हाथों से थी श्रेयस्कर,
यदि और किसी के द्वारा उनका वध होता,
तो और देखते
दृश्य सूर्य
तारक-मयंक ।

हिंदू का कितना कोप ख़ालसों पर लेता,
यदि उनपर कोई सिक्ख कृपाण चला देता,
(पागल होता जो ज़र, ज़मीन, ज़न को खोता)
ऐसा होता
संग्राम, शत्रु
हँसते निशंक ।

यदि किसी तुरुक से छुरा उन्हें भोंका जाता,
हिंदू-मुस्लिम का युद्ध कहाँ रोका जाता,
यह दुरवस्थाएँ हिंदू क़ातिल ने टालीं,
इस महा विपद् में भी भगवान हुए त्राता,
हिंदुत्व तुझे ही
लेना था
माथे कलंक ।

१०५

हो चाहे जितनी बड़ी विपद, कहना पड़ता—
ईश्वर जो कुछ करता है सब अच्छा करता।
अच्छा है जो बापू जी का वलिदान हुआ !
अच्छा है जो
हिंदू ने उनपर
वार किया !

मरना तो, भाई, नहीं किसी का रुकता है,
वलिदानी के ही आगे दानव झुकता है,
था संप्रदायपन उच्छृंखल शैतान हुआ,
वलि की मंत्रित
साँसों ने उसको
बाँध दिया।

कल्पना करो उनका वध मुस्लिम-सिख द्वारा—
मिट्टी होता है उनका जीवन-श्रम सारा !
था नहीं अभागा इतना हिंदुस्तान हुआ,
था नहीं अभागा इतना भारत का प्यारा;
कुछ मतलब से
हिंदू ने पातक-
भार लिया।

१०६

जब प्रथम बार यह समाचार हमने पाया,

गांधी जी की हत्या हिंदू के हाथ हुई,

भीतर बैठा हिंदुत्व अचानक सिहर उठा,

हिंदू होने में

पहली बार

लगी लज्जा।

जब किसी तरह इस कड़ुए सच को लीला मन,
बापू जी इस पृथ्वी के ऊपर नहीं रहे,
तब जिस विधि से यह कुत्सित हत्याकांड हुआ,
वह लगी हमारे
मस्तक-मानस
को मथने।

वलि होना ही था यदि बापू की क़िस्मत में
अच्छा होता, मारे जाते अंग्रेज़ों से,
जिनके विरुद्ध वह जीवन भर आरूढ़ रहे,
या यवनों से
नोआखाली की
यात्रा में।

पर मिला सोचने को ठंडे दिल से मौक़ा
जब, तब मन के अंदर यह दृढ़ विश्वास हुआ,
हिंदू हाथों में जो बापू का ख़ून लगा,
उससे ही होगी भारत के हित की रक्षा,
है सूक्ष्म प्रेरणा इसके पीछे ईश्वर की।

हिंदू में था जो मुस्लिम के प्रति क्रोध-बैर
पछतावा बनकर अब वह अंदर पैठेगा,
पछतावे से अंतर विशुद्ध हो जाता है,
अंतर विशुद्ध में ही रहता है न्याय-प्रेम,
औ' न्याय-प्रेम हैं जहाँ, शांति है उसी जगह।

जिस तरह हुई है बापू जी की क़ुर्बानी,
उससे ही हो सकता था उनका मिशन सफल;
प्रभु ने हमको है नहीं अभी भी बिसराया,
हमपर अब भी है उनके हाथों की छाया।

१०७

संस्कार हमारे हैं सदियों से पड़े हुए,

हम सोचा करते जाति-वर्ण के मानों में,

इस महापाप से कुछ बचने की अभिलाषा,

मन बोला,

इससे हुआ कलंकित

ब्राह्मणत्व ।

मन के अंदर जो लहर ज़हर की आई थी,
वह क्षमा नहीं लेकिन अपने को कर पाई,
बोली, मेरा भी इस हत्या में हिस्सा है,
अंतर फूटा,
हिंदुत्व कलंकित
हुआ आज।

मुस्लिम समझे जो वृक्ष उन्होंने रोपा था,
उसका ही सबसे घातक फल यह क़त्ल हुआ,
गो आज पुती है हिंदू के मुख पर कालिख,
आवाज़ उठी,
भारतीयता पर
लगा दाग़।

वे नहीं बद्ध थे वर्ण-धर्म से, धरती से,
वे थे प्रतीक देवत्व और दैवी गुण के,
उनकी पावन सत्ता के ऊपर हाथ उठा
दानवी वृत्ति, संकुचित, घृणित, गर्हित, कलुषित
मानवता ने
छू आज पतन की
सीमा ली

१०८

सिनेमा समाप्ति पर देश-ध्वजा दिखलाते हैं
जिसके नीचे भारत के नेता आते हैं,
सबके अख़ीर में आते हैं प्यारे बापू,
दोनों हाथों से
कर प्रणाम
लेते आसन।

प्रवचन रेकॉर्ड रेडियो कभी सुनवाता है,
सुनते-सुनते मन में यह ध्यान समाता है,
बैठे बापू हैं स्वर्गलोक से बोल रहे,
स्वर हैं उनके,
कितने निर्मल,
कितने पावन।

हम धन्यवाद विज्ञानकाल को देते हैं,
जिसके कारण उनके दर्शन कर लेते हैं,
सुन लेते हैं निर्भीक, दिव्य उनकी वाणी,
जब बिखर चुके
हैं उनकी काया के
कण-कण।

उनकी दैवी आभा को आज समझते हम
जब घिरे हुए हैं उनके मातम के तम से,
उनके चरणों से स्वर्ग धरा पर चलता था,
उनके शब्दों में
स्वर्ग बोलता था
हमसे।

१०६

रघुपति, राघव, राजा राम,
पतित-पावन सीताराम !

विष्णु दिगंबर से था मैंने
प्रथम सुना यह मंत्र महान,

अर्थ भूल स्वर की मधुता पर मुग्ध हुए थे मेरे प्राण ।

रघुपति, राघव, राजा राम,
पतित-पावन सीताराम !

फिर प्रार्थना सभा में मैंने
श्रवण किया यह मंत्रोच्चार,

देते थे बापू जी उसपर ताली बैठे पलथी मार।

रघुपति, राघव, राजा राम,
पतित-पावन सीताराम!

बापू के सब सिद्धांतों के
लगे मुझे वे शब्द निचोड़,

उनकी धुन सुनकर बापू जी हो जाते थे आत्म-विभोर।

रघुपति, राघव, राजा राम,
पतित-पावन सीताराम!

नोआखाली, कलकत्ते में,
औ' बिहार, दिल्ली के बीच,

इसी मंत्र से बापू लाए दानव को मानव तक खींच।

रघुपति, राघव, राजा राम,
पतित-पावन सीताराम!

उनके शव के निकट, साथ
अरथी के और चिता के पास,
इस पावन ध्वनि से हैं मुखरित
किए गए धरती-आकाश

इस अविरत गति से, सुन पड़ती जब कानों में उसकी तान,
उनके शव; अरथी-यात्रा का, चितादाह का बरबस ध्यान
आ जाता है और विकल होने लगते हैं मेरे प्राण
और शांति कुछ मिलती है जब कंठ शुरू कर देता गान—

रघुपति, राघव, राजा राम,
पतित-पावन सीताराम !

११०

है आज अठारह मई, अजित[1] का जन्म दिवस,
वह तेज, अमित का; मेरा जीवन-धन-सर्बस,
उसका जन्मोत्सव आज मनाना है हमको,
मन से चिंता-दुख
आज हटाना
है हमको।

---

[1] तेज--कवि की पत्नी। अमित--कवि का पंच वर्षीय पुत्र। अजित--कवि का वर्ष भर का पुत्र।

हैं दिवस एक सौ आठ आज तक बीते
जब से बापू के प्राण उड़े अंबर में,
तब से मेरी लेखनी आजतक रोई
गीतों के छंदों
में, पद-अक्षर-
स्वर में।

जो अमित-अजित की गूँज रही किलकारी,
उसमें भविष्य मानो मुझसे कहता है,
ढह जाय वृक्ष चाहे भारी से भारी,
जीवन का नद
आगे को ही
बहता है।

जो महापुरुष, दृष्टा, पैग़ंबर होते
अनुकूल समय के बहुत पूर्व आते हैं,
जब उनको गए ज़माना एक गुज़रता,
तब वे इस दुनिया
में समझे
जाते हैं।

आशीष एक दे, गोद उठा दोनों को,
करता समाप्त हूँ अपने दुख के गाने,
मेरे पुत्रों की औ' पौत्रों की दुनिया
गांधी की सत्ता
और अधिक
पहचाने !

गांधी की सत्ता
और अधिक
सन्माने !

१११

सौभाग्य-सूत्र तुमने भारत का काता,
तुम बने देश के नंगेपन के त्राता,
हो खड़ा किसी भी श्रेणी में अब जाकर,
है ऊँची उसकी
गर्दन, मुँह
उजियाला

तुम परंपरा में थे गुरुओं, गुणियों की,
दृष्टा, मनीषियों की, ऋषियों-मुनियों की,
बन गया सूत्र सम्यक ज्ञानों का शुचितर,
जो तुमने अपने
मुख से शब्द
निकाला।

तुम भावी युग के सूत्रकार हो, बापू,
तुम भावी जग के सूत्रधार हो, बापू,
चरणों में श्रद्धा से मैं शीश नवाकर,
अर्पित करता हूँ
यह सूतों की
माला।

समाप्त